पंजीयन संख्या-69904/98
डाक पंजीयन संख्या-एसएसपी/एल०डब्ल्यू०/एन०पी०/318/2017-19

ओ३म्

श्रृण्वन्तुविश्वे अमृतस्य पुत्राः

आर्य्य लोक वार्ता

लखनऊ से प्रकाशित वैदिक विचारधारा का हिन्दी मासिक

वर्ष-२०, अंकः-०११, मई, सन्-२०१८, सं०-२०७४ वि०, दयानंदाब्द १९३, सृष्टि सं० १,९६,०८,५३,११८; मूल्य : एक प्रति ५.००रु., वार्षिक सहयोग १००.०० रुपये

भारत—विभाजन

जो कार्य मुगल सात सौ साल में न कर सके, जिन्ना ने कुछ महीनों में ही कर दिखाया!

नापाक मनोवृत्ति आज भी जिन्दा है !

-प्रकाशवीर शास्त्री-

मुस्लिम पृथक्करण नीति का आरम्भ उस दिन से विशेष हुआ जिस दिन सर सय्यद अहमद खाँ ने अलीगढ़ में मुहम्मदन एंग्लोओरिण्टल कालेज (जो आज मुस्लिम यूनिवर्सिटी है) की नींव डाली और यहाँ पर फिर से औरंगजेब और चंगेज तैयार होने लगे। वर्तमान हैदराबाद के राज्य प्रमुख मीर उस्मान अली के ग्रेजुएट बन कर जाते समय यही कहा गया था आज दक्षिण में दूसरा औरंगजेब बनकर जा रहा है। नवाब भोपाल, शेख मुहम्मद अब्दुल्ला, स्व.लियाकत अली खां, डा.जियाउद्दीन (जो पाकिस्तान बनने से पूर्व यूनिवर्सिटी के हाईकमिश्नर रूप में मरे) इसी विश्व विद्यालय की विभूति रह चुके हैं। *नोआखाली टिपरा और कलकत्ते का* डाइरेक्ट एक्शन कराने तथा सरहद के सीधे साधे पठानों को जाकर उभारने में इस यूनिवर्सिटी के छात्रों का प्रमुख हाथ था। अलीगढ़ की मंडी फूंकने और यू.पी.में विष फैलाने तथा मुस्लिम लीग को चार चांद लगाने में अच्छा पार्ट यहां से अदा किया गया। सरसय्यद अहमद खां के विचार पहले पर्याप्त *अंशों में* राष्ट्रीय थे। १८८५ई. में गुरदास पुर की एक सभा में भाषण देते हुए उन्होंने कहा था- हिन्दू और मुसलमान भाइयों, क्या आप लोग हिन्दुस्तान के अलावा किसी अन्य देश में बसते हैं? क्या आप एक ही भूमि पर नहीं बसते और उसी में जलाये या दफनाये नहीं जाते? स्मरण रखिये हिन्दू और मुसलमान शब्दा दो धर्मों के द्योतक अवश्य हैं पर इस (भारत) भूमि पर बसने वाले हिन्दू *मुसलमान ईसाई एक राष्ट्र के द्योतक* हैं।

आगे चलकर वह ही सर सय्यद जो इतना उदार दृष्टिकोण रखते थे अंग्रेजों द्वारा उत्पन्न की गई तत्कालीन राजनैतिक परिस्थितियों से इतने प्रभावित हुए जो मुसलमानों को कांग्रेस संगठन से पृथक् रहने का परामर्श देने लगे। १८८७ में लखनऊ में मुहम्मदन एजुकेशनल कांग्रेस का अधिवेशन हुआ जिसमें उन्होंने खुलकर कांग्रेस का विरोध किया। १८९८ में उनका देहान्त हुआ परन्तु जीवन के अन्तिम भाग में आकर उन पर मुस्लिम रंग पर्याप्त गहरा चढ़ गया था।

सर सय्यद के बाद इस ओर दूसरा दृढ़ पग उस दिन उठा जब १९०३ में लार्ड कर्जन ने चटगांव और ढाका डिवीजनों को बंगाल से पृथक् करने की योजना बनाई जिसका पर्याप्त विरोध चलता रहा। कुछ मुसलमानों की वायसराय की ओर से पीठ थपथपाई गई और कहा गया कि यदि बंगाल के दो टुकड़े हो जाते हैं तो आसाम का वह भाग जहां मुसलमान अधिक हैं बंगाल के इस मुस्लिम बहुल भाग से मिल जायेगा और इस तरह एक अच्छा गढ़ मुसलमानों का यहां हो जायेगा। कांग्रेस क्योंकि हिन्दुओं का प्रतिनिधित्व छुपकर करती है इसलिये बंगाल का विभाजन फूटी आंख भी वह नहीं देखना चाहती। सो तुम (मुस्लिम) भी अपनी पृथक् शक्ति बनाकर क्यों नहीं कहते विभाजन होना चाहिए। यह था पहला अवसर मुस्लिम लीग के मैदान में आने का परन्तु झूठ और फिर दृढ़ता से उसका पोषण मामूली बात तो नहीं होती मुस्लिम लीग अपने आन्दोलन में सफल नहीं हो पाई उधर अंग्रेज को भी १८५७ की याद अभी हरी ही थी।

तीसरा और भयंकर पग उठा उस दिन जिस दिन गांधी जी तथा अन्य तत्कालीन नेताओं ने जब यह कहना आरम्भ किया बिना हिन्दू मुसलमानों के एक हुए स्वराज्य मिलना कठिन है *और १९१६ में लखनऊ में कांग्रेस* और लीग ने समझौता कर ब्रिटिश सरकार के सामने संयुक्त मांग पेश की। कांग्रेस ने पृथक् निर्वाचन प्रणाली को ही स्वीकार नहीं किया अपितु उन प्रान्तों में जहां मुसलमानों का अल्पमत था जनसंख्या के अनुपात से बहुत अधिक प्रतिनिधित्व भी मान लिया। अंग्रेज की बांछें खिल उठीं। अब मैं अपने उद्देश्य में पूरा हो गया मुसलमान रूपी भारी चट्टान स्वराज्य की तेज भागती हुई गाड़ी के मार्ग में अब मैंने ऐसी डाल दी है जो आसानी से न हट सके। तिलक, गोखले और लाजपतराय की तपस्यायें देखें आगे अब क्या करती हैं? इधर कांग्रेस मुसलमानों को अपनाने के लिए कभी सात, कभी चौदह और कभी अट्ठाइस और राउन्टेबल कांफ्रेंस में ब्लैक चैक (कोरा कागज) भी उनके सामने रखती रही परन्तु मर्ज बढ़ता गया ज्यों ज्यों दवा की। जहां इससे उनके हौसले बढ़े और उन्हें भी यह पता चला हमारा भी कुछ अस्तित्व है वहां दूसरा उल्टा रूप इसका यह हुआ उधर हिन्दू जिसकी खांडे की धार ने कभी यूनानी सिकन्दर और सेल्यूकस को पानी पिलाया था जिसकी कटारियों ने कभी आगरे और दिल्ली की सल्तनत हिलाई थीं अपनी शक्ति पर भरोसा कम करने लगा। शौकत अली और मुहम्मद अली को गांधी जी ने बरसों अपने साथ रखा, खिलाफत आन्दोलन में लाखों रुपया बहा दिया पर क्या परिणाम निकला? उन्हीं रामपुर के अली बन्धुओं में एक ने यह भी कहा- एक गिरे से गिरा मुसलमान भी गांधी जी से लाख दर्जे बेहतर है क्योंकि वह कुरान पर यकीन रखता है। मुसलमान जब यह समझने लगा स्वराज्य तेरे ही कारण मिल या रुक सकता है उसने कभी गौकशी, कभी ताजियेदारी और कभी मस्जिद के आगे बाजे और कभी मन्दिरों के शंखों पर झगड़े आरम्भ कर दिये जो समस्यायें इतने दिनों से कभी नहीं उठी थीं वह भी उन दिनों उठने लगीं। उठती भी क्यों ना हमारे लीडरों का आवश्यकता से अधिक महत्व देना और अंग्रेज का शाबाश कहकर बजता हुआ डमरू देखकर शैतान खुलकर खेलने लगा। चौदह प्रतिशत लोगों को तैंतीस प्रतिशत अधिकार मिल गये इतने पर भी वह शांत कहाँ? आधा देश बांटने की तैयारी करने लगा। अंग्रेज के अतिरिक्त भोपाल, रामपुर, हैदराबाद और जूनागढ़ से भी पीठें ठोकी ही जा रही थीं, इधर कांग्रेस के अन्दर रहकर जिन्ना हरेक को यह जान ही चुका था कौन कितने पानी में है और किसमें कहां तक खड़े रहने का दम है? उसने इसका पूरा लाभ उठाया और मुसलमानों का नेतृत्व आरम्भ कर दिया गया।

उत्तर पश्चिम के मुसलमान किसी भी विदेशी आक्रमण के मुकाबले भारत की रक्षा अच्छी कर सकेंगे चाहे वह आक्रमण विचारों का हो या अस्त्रों का। उधर लन्दन में बैठकर पंजाबी चौ. रहमत अली आदि गौरांग महाप्रभुओं की छत्रछाया में १९३३ में पाकिस्तान का मानचित्र (नक्शा) तैयार कर रहे थे जिसे बाद में जिन्ना रेडियो से ब्राडकास्ट कर दिया गया। मालवीय जी आदि नेताओं को बदनाम किया जाने लगा और फिरका परस्त कहा जाने लगा, उधर हिन्दू मुस्लिम ऐक्य का गलत ढंग से श्रीगणेश करने पर हमारे कांग्रेसी नेता तो अपने बनाये चक्रव्यूह से निकलने में उतने ही असफल सिद्ध हो रहे थे जिस तरह कश्मीर का प्रश्न सुरक्षा

परिषद् में ले जाकर और जनमत संग्रह को एक बार कहकर आज हो रहे हैं। इतने में ही सन् ३७ के वह चुनाव आये जिसमें मुस्लिम लीग को अपनी शक्ति तोलने का भी अवसर मिल गया। सारे भारत में कुल ४८२ मुस्लिम सीटें थीं जिनमें कांग्रेस ने ५८ सीटों पर अपने प्रतिनिधि खड़े किये जिनमें २६ सफल हुए। इससे भी अंग्रेज की हिम्मत बंधी दूसरे बर्मा के भारत से पृथक् करने पर जब बंग भंग जैसा कड़ा विरोध कांग्रेस की ओर से न देखा तो उसने समझा अब यह फंस गये उस चक्र में जो हमने चलाया था।

जिन्ना का पाकिस्तान बनाने का आन्दोलन बड़ी तेजी से चला और सन्

(शेष पृष्ठ ३ पर)

विनय पीयूष

तू भी अपनी प्यास बुझा ले !

यथा गौरो अपाकृतं तृष्यन्नेत्पवेरिणम्।
आपित्वे नः प्रपित्वे तूयमागहि कण्वेषु सु सचा पिब।।
(साम. पू. : 3/2/10)

तू भी अपनी प्यास बुझा ले !

जैसे मृग को मिले जलाशय,
हमें मिला भक्तों का आश्रय,
जाग बन्धु, अब देर न कर कुछ,
अमृत पी ले, प्राण जुड़ा ले !

तू भी अपनी प्यास बुझा ले !

काव्यानुवाद : अमृत खरे

सम्पादकीय

अतुलनीय है- शहीद का रक्त

राय उमानाथ बली प्रेक्षागृह, कैसरबाग, लखनऊ में दि. २७ मार्च को 'आर्य लोक वार्ता सम्मान समारोह-२०१८' को सम्बोधित करते हुए राष्ट्र निर्माण पार्टी, नई दिल्ली के राष्ट्रीय अध्यक्ष ठाकुर विक्रम सिंह ने कहा कि- लोकतंत्र को सुदृढ़ करने वाली संसद और विधान सभाएँ आज श्रीहीन होती जा रही हैं और वहाँ से देश को दिशा निर्देश देने वाले विचारों की प्राप्ति नहीं हो पा रही है। ठाकुर साहब की यह चिन्ता शत प्रतिशत जायज है। राजनेताओं के वैचारिक दारिद्र्य के अनेक उदाहरण आये दिन मिलते जा रहे हैं।

अभी हाल ही में- उत्तर प्रदेश सरकार की एक कैबिनेट मंत्री ने ख्वाजा मुईनुद्दीन विश्वविद्यालय में आयोजित पुस्तक मेले के शुभारंभ के अवसर पर जो वक्तव्य दिया, वह हैरान करने वाला है। आपने कहा-'जो शक्ति एक शहीद के लहू में होती है वही शक्ति कलम की स्याही में होती है।' (दैनिक जागरण, १ मई २०१८)

यह पहली बार नहीं है, जब किसी राजनेता ने ऐसा सतही बयान दिया है। पूर्व मंत्री, नेतागण ऐसे बयान देते रहे हैं, जिससे उनकी वैचारिक दरिद्रता उजागर होती है। जिन दिनों पं.गोविन्द वल्लभ पंत उ.प्र. के मुख्यमंत्री थे, उनके स्वागत में एक राजनेता ने उन्हें हिन्दी का लेखक और नाटककार बताया था। वास्तविकता यह है कि गोवन्द वल्लभ पंत नाम के एक नाटककार हो चुके हैं; जिनका तत्कालीन मुख्यमंत्री से कोई लेना देना नहीं था।

ज्ञात होना चाहिए कि शहीदों के रक्त से कलम की स्याही कभी भी समतुल्य नहीं हो सकती। इनमें पारस्परिक सम्बन्ध तो भक्त भगवान, आराधक आराध्य, आश्रय और आलंबन का है। कलम की स्याही शहीदों की वंदन करके कृतार्थ होती है। शहीदों का रक्त जहाँ गिरता है, साहित्यकार उस स्थल की धूल को मस्तक में लगाकर गौरव का अनुभव करता है। अपने आसपास बिखरी हुई सत्ता की चमकती हुई चाँदनी की चकाचौंध में कदाचित् वे नहीं देख पाईं कि कवि शहीदों की किस तरह वंदना करते हैं। महाकवि रामधारी सिंह 'दिनकर' लिखते हैं-

कलम आज उनकी जय बोल!
चढ़ा अस्थियां बारी बारी, सुलगाई जिसने चिनगारी
जो चढ़ गये राष्ट्रवेदी पर, लिए बिना गर्दन का मोल!

'दिनकर' की उपर्युक्त पंक्तियाँ पाठ्यक्रमों का हिस्सा रही हैं। इतना ही नहीं, 'एक भारतीय आत्मा' उपनाम से काव्य रचना करने वाले राष्ट्रीय काव्यधारा के महान कवि श्री माखनलाल चतुर्वेदी की यह काव्य पंक्तियां तो आज भी बच्चे बच्चे की जबान पर हैं-

मुझे तोड़ लेना वनमाली, उस पथ पर तुम देना फेंक,
मातृभूमि हित शीशा चढ़ाने, जिस पथ जायें वीर अनेक!

इससे पहले भी इस कोटि के वक्तव्य आते रहे हैं। आनन्द नारायण मुल्ला उर्दू साहित्य के प्रख्यात शायर माने जाते हैं। उन्होंने राष्ट्रीय काव्यधारा में अनेक रचनाएँ की हैं। न्यायाधीश के रूप में सफलतापूर्वक कार्य किया। सेवानिवृत्ति के बाद उन्हें लखनऊ संसदीय क्षेत्र से कांग्रेस का टिकट मिला और सांसद बने किन्तु इस मशहूर शायर ने आगे चलकर अपनी शायरी की दो पंक्तियाँ संसद में सुनाकर वैचारिक दुनिया में एक भूचाल ला दिया। वे पंक्तियाँ थीं-

खूने शहीद से भी कीमत में है सिवा
फनकार के कलम की स्याही की एक बूँद।

(कवि की लेखनी में जो स्याही प्रयुक्त होती है उसकी एक बूँद शहीद के रक्त से भी कीमती है।)

जिस शहीद के रक्त की बूँदों के सम्मान की परम्परा इतनी महिमामय हो- 'जो शहीद हुए हैं उनकी, जरा याद करो कुर्बानी'- जैसी पंक्तियों को सुनकर देश के तत्कालीन प्रधानमंत्री जवाहरलाल नेहरू की आँखें छलछला आई हों- उस देश का कोई कवि जब कलम की स्याही को खूने शहीद के बराबर या उससे कीमती बताने लगे तो उसके पीछे कुछ न कुछ होना चाहिए।

पता चला कि श्री आनन्द नारायण मुल्ला के पिता थे- श्री जगतनारायण, जब शहीद रामप्रसाद बिस्मिल, चन्द्रशेखर आजाद, अशफाक इत्यादि पर आजादी की लड़ाई में जो मुकदमा चल रहा था, तो सभी भारतीय वकीलों ने निश्चय किया था कि स्वतंत्रता सेनानियों के विरुद्ध अंग्रेजों की ओर से कोई हिन्दुस्तान वकील पैरवी नहीं करेगा। सभी हिन्दू मुस्लिम वकीलों ने शहीदों के विरुद्ध पैरवी का वहिष्कार किया किन्तु उस समय जगतनारायण मुल्ला ही ऐसे वकील निकले थे जो उक्त केस में अंग्रेजों की तरफ से अदालत में खड़े हुए थे। उन्हीं जगतनारायण मुल्ला के सुपुत्र थे आनन्द नारायण मुल्ला।

संयोगवश उन दिनों समाजवादी शायर कवि स्वनामधन्य श्री चन्द्रिका सिंह 'करुणेश' भी मौजूद थे जिन्होंने आनन्द नारायण मुल्ला को माकूल जवाब दिया और निम्नांकित पंक्तियां लिखीं और सुनाईं। इन पंक्तियों से श्री मुल्ला को अपनी घटिया सोच का करारा जवाब मिला और समग्र देशवासियों ने इन पंक्तियों का हृदय से स्वागत किया था-

दुश्मन रहा है कौम का, सरदार नहीं है।
इंसानियत का वो अलमूवरदार नहीं है।
जो तौलता है इल्म से खूने शहीद को-
गद्दार है, गद्दार, वो फनकार नहीं है।।

अतुलनीय है शहीद के रक्त की एक बूँद!

सत्यार्थ प्रकाश वार्ता-१८४

युग प्रवर्त्तक महर्षि दयानन्द सरस्वती के अमरग्रंथ 'सत्यार्थ प्रकाश' के धारावाहिक स्वाध्याय के क्रम में नवम समुल्लास का अंश

विद्या अविद्या

अर्थात् कर्म और उपासना अविद्या इसलिये है कि यह बाह्य और अन्तर क्रियाविशेष है ज्ञान विशेष नहीं। इसी से मंत्र में कहा है कि बिना शुद्ध कर्म और परमेश्वर की उपासना के मृत्यु दुःख से पार कोई नहीं होता। अर्थात् पवित्र कर्म, पवित्रो- पासना और पवित्र ज्ञान ही से मुक्ति और अपवित्र मिथ्याभाषणादि कर्म पाषाण मूर्त्यादि की उपासना और मिथ्याज्ञान से बन्ध होता है।

कोई भी मनुष्य क्षणमात्र भी कर्म, उपासना और ज्ञान से रहित नहीं होता। इसलिये धर्मयुक्त सत्यभाषणादि कर्म करना और मिथ्याभाषणादि अधर्म को छोड़ देना ही मुक्ति का साधन है।

(प्रश्न) मुक्ति किसको प्राप्त नहीं होती?

(उत्तर) जो बद्ध है!

(प्रश्न) बद्ध कौन है?

(उत्तर) जो अधर्म ज्ञान में फसा हुआ जीव है।

(प्रश्न) बन्ध और मोक्ष स्वभाव से होता है या निमित्त से?

(उत्तर) निमित्त से। क्योंकि जो स्वभाव से होता तो बन्ध और मुक्ति की निवृत्ति कभी नहीं होती।

प्रश्न-

न निरोधो न चोत्पत्तिर्न बद्धो न च साधकः।
न मुमुक्षुर्न वै मुक्तिरेत्येषा परमार्थता।।

यह श्लोक माण्डूक्योपनिषद् पर है- जीव ब्रह्म होने से वस्तुतः जीव का

निरोध अर्थात् न कभी आवरण में आया, न जन्म लेता, न बन्ध है और न साधक अर्थात् न कुछ साधना करनेहारा है। न छूटने की इच्छा करता और न इसकी कभी मुक्ति है क्योंकि जब परमार्थ से बन्ध ही नहीं हुआ तो मुक्ति क्या?

(उत्तर) यह नवीन वेदान्तियों का कहना सत्य नहीं। क्योंकि जीव का स्वरूप अल्प होने से आवरण में आता, शरीर के साथ प्रगट होने रूप जन्म लेता, पापरूप कर्मों के फल भोगरूप बन्धन में फसता, उसके छुड़ाने का साधन करता, दुःख से छूटने की इच्छा करता और दुःखों से छूट कर परमानन्द परमेश्वर को प्राप्त होकर मुक्ति को भी भोगता है।

(प्रश्न) ये सब धर्म देह और अन्तःकरण के हैं। जीव के नहीं। क्योंकि जीव तो पाप पुण्य से रहित साक्षीमात्र है। शीतोष्णादि शरीरादि के धर्म्म हैं; आत्मा निर्लेप है।

(उत्तर) देह और अन्तःकरण जड़ हैं उनको शीतोष्ण प्राप्ति और भोग नहीं है। जैसे पत्थर को शीत और उष्ण का भान या भोग नहीं है। जो चेतन मनुष्यादि प्राणि उसका स्पर्श करता है उसी को शीत उष्ण का भान और भोग होता है। वैसे प्राण भी जड़ हैं। न उनको भूख न पिपासा किन्तु प्राण वाले जीवन को क्षुधा, तृषा लगती है। वैसे ही मन भी जड़ है। न उसको हर्ष न शोक हो सकता है किन्तु मन से हर्ष शोक दुःख सुख का भोग जीव करता है। *(-क्रमशः)*

वेदांजलि

सनातन की वैदिक परिभाषा

❑पं.शिव कुमार शास्त्री,
भू.पू.संसद सदस्य

सनातनमेनमाहुरुताद्य स्यात्पुनर्णवः।
अहोरात्रे प्र जायेते अन्यो अन्यस्य रूपयोः।।

-अथर्व.10/8/23

शब्दार्थ-

(**एनम्**) इसको (**सनातनम्**) सदा रहने वाला, अनादि कालीन (**आहुः**) कहते हैं (**उत**) और तो भी यह (**अद्य**) आज, प्रतिदिन (**पुनः नवः**) फिर फिर नया (**स्यात्**) होता है (**अन्यः**) एक (**अन्यस्य**) दूसरे के (**रूपयोः**) रूपों में, समान रूपों में ही (**अहोरात्रे**) ये दिन-रात (**प्रजायेते**) सदा उत्पन्न होते रहते हैं।

व्याख्या-

इस पवित्र मंत्र की व्याख्या अनेक दृष्टिकोणों से हो सकती है। किसी भी प्रकार से विचार कीजिए, मंत्र के आशय को खोलने वाली चावी ''सनातनम्'' की, अनादित्व की परिभाषा ''पुनः नवः'' फिर-फिर होना बताया है। जो नित्य नया नहीं होता, वह सनातन नहीं हो सकता; वह जीर्ण हो गया, पुराना हो गया। वह आज चलने योग्य नहीं (Out of date) रहा।

प्रसिद्ध फ्रांसीसी यात्री बर्नियर, जो 14 वर्षों तक दाराशिकोह और औरंगजेब का चिकित्सक बनकर भारत में रहा, उसने अपनी भारत-यात्रा के विवरण में एक घटना इस प्रकार लिखी है-

''एक बार उपनिषदों के विषय में कुछ विचार-विनिमय करने के लिए दाराशिकोह काशी के विद्वानों के पास गये। बादशाह के निमंत्रण पर काशी के सभी शीर्षस्थ विद्वान् एकत्रित हुए और दारा ने उनसे बात करके अपनी जिज्ञासा शान्त की। जब उनका विचार-विनिमय समाप्त हुआ तो काशी के सब विद्वानों को एकत्र देखकर मेरे मन में भी कुछ पूछने की इच्छा जागृत हुई। दाराशिकोह की अनुमति लेकर मैंने विद्वानों से पूछा- 'आप जिस धर्म को मानते हैं, वह धर्म कैसा है?' पण्डितों ने उत्तर दिया-'वह सर्वोत्तम धर्म है।' बर्नियर ने आगे पूछा- 'इस सर्वोत्तम धर्म में मैं सम्मिलित होना चाहूँ तो क्या आप मुझे अनुमति देंगे?' उन्होंने उत्तर में कहा-'यह तो हम नहीं करेंगे। तुम्हारे लिए वही धर्म ठीक है जो तुम मानते हो।'

यह था उस सनातनधर्म का स्वरूप जो एक असंस्कृत को संस्कृत नहीं कर सकता। जिसने अपने जीने का अधिकार खो दिया वह सनातन कहाँ रहा? उस समय का तथाकथित धर्म एक किनारे का दरिया था। धर्म के लक्षण **'यतोऽभ्युदयनिः श्रेयससिद्धिः स धर्मः'** में से **अभ्युदय** निकल गया था। उन लोगों की दृष्टि केवल **निःश्रेयस्** पर टिकी थी।

ऋषि दयानन्द के कार्यक्षेत्र में अवतीर्ण होने के समय हमारे तथाकथित सनातन धर्म की भी यही दशा हो गई थी। उसमें पुनः नया होने की क्षमता नहीं रही थी। उस धर्म का स्वरूप हमें बाधाओं की नदी से पार उतारनेवाली नाव के समान नहीं रहा था, अपितु वह ऐसा पत्थर बन गया था जो पार जाने की इच्छावाले को वहीं डुबोने का कारण बनता था। इस दिशा में ऋषि दयानन्द ने जो प्रयत्न किया वह अद्भुत था और उसका अब तक ठीक-ठीक मूल्यांकन नहीं हुआ।

ऋषि चाहते थे कि धर्म के नाम पर बने ये संकीर्ण दायरे समाप्त हों और सारी मानवजाति एक परिवार के समान परस्पर एक-दूसरे की सहायक बनकर अपने जीवन के लक्ष्य तक पहुँचे।

सांसारिक उन्नति के मार्ग में जो बाधाएँ आवें, उन्हें नित-नये उत्साह से दूर करें। बाधाओं को दूर करनेवाले इन विहित उपायों का नाम ही धर्म है। इन उपायों को व्यवहार में लाते समय वही नवीनता अनुभव करनी चाहिए जो रात्रि व्यतीत होने पर अगले दिन प्रभात में काम करने के लिए जो उत्साह और उमंग होती है। वेद ने सनातन की परिभाषा ही यह की है कि -**'अद्य स्यात् पुनर्णवः'** -जैसे आज के रूप में आया दिन नया होता है, उसे कोई नहीं कहता कि वह पुराना ही तो दिन है, वैसा ही सूर्य निकल रहा है, वैसी ही धूप है, यह वही पुराना घिसापिटा दिन है; अपितु रात्रि व्यतीत होने पर प्रभात में हम नये जोश से उसका स्वागत करते हैं। बस, यही नवीनता धार्मिक मार्ग में आई बाधाओं को दूर करने में भी होनी चाहिए।

मध्यकाल के हिन्दुओं ने जीवन की वह कला भुला दी थी, अतः ये क्षीण हो रहे थे, मर रहे थे। इनके बन्धु, सभी पुरुष और बच्चे नाना छल-प्रपंचों से मुसलमान और ईसाई बन रहे थे और ये असहाय टुकर-टुकर देख रहे थे। मुसलमानों के शासनकाल में बड़े-बड़े दिग्गज संस्कृत के विद्वान् दान, तीर्थ ओर जप-तप पर बड़े-बड़े पोथे तो रच रहे थे, किन्तु बलपूर्वक भ्रष्ट किये गए अपने इन बन्धुओं को शुद्ध करके पुनः अपने धर्म में लाने का कोई विधान नहीं बना सके। प्रति दस वर्ष की मर्दशुमारी में हिन्दुओं की संख्या जिस अनुपात में घट रही थी, उसके अनुसार 45 वर्ष की मर्दुमशुमारी में हिन्दू समाप्त हो जाते और केवल इतिहास के पृष्ठों पर उनका नाम शेष रह जाता।

ऋषि दयानन्द ने परिस्थिति का अध्ययन करके इस नामशेष सनातनधर्म में प्राणप्रतिष्ठा की। धर्म के नाम पर जो-जो अधर्म की बातें इसमें प्रविष्ट हो गई थीं, उनका तीव्र खण्डन करके इनमें से विजातीय सड़ा-गला हिस्सा काटके फेंक दिया और वेद-शास्त्रोक्त धर्म का सच्चा स्वरूप संसार के सामने प्रस्तुत किया। जो योरोपियन विद्वान् वेद के दूषित अर्थ करके अंग्रेजी पढ़े-लिखे भारतीयों को ईसाई बनाने का स्वप्न देख रहे थे, उनकी आशाओं पर तुषारपात हो गया। *('श्रुति सौरभ' से साभार)*

दयानन्द चरितम्

-आचार्य दीपंकर, मेरठ

छन्द-१०८

स धर्मो भूमिर्वा सृजति न निसर्गं तनुजुषां
सुसंस्कारः पुण्यः सृजति निखितं संस्कृतिरियम्।
त्वमेतेषां शुध्यै प्रवदसि यते ! क्रान्तमनसा
परं रूढ़िक्लिष्टस्तदपि जडधी नैव चिनुते।।

मानवों का स्वभाव न तो धर्म से
बनता है और
न किसी भूमि या देश से।
अच्छे संस्कार और संस्कृति से ही
मानवों के अच्छे स्वभाव बनते हैं !!
हे संन्यासी !
तुम भविष्य-द्रष्टा थे !
इसीलिए इन्हें शुद्ध करके
समाज में फिर से मिलाने की
सलाह देते थे।
परन्तु रूढ़ियों के मारे हुए
मूर्खों ने तुम्हारी वह सलाह
भी स्वीकार नहीं की।

('दयानन्द चरितम्' से साभार, क्रमशः)

होता सदस्य परिचय-60

लखनऊ आर्य समाज के लौहपुरुष

महाशय आनन्द भण्डारी

दि. ०८.०६.२०१६ को जब मैं आलमबाग में पुरी सर्जिकल के पीछे खोजते खोजते दिन में लगभग ११ बजे महाशय आनन्द भण्डारी के आवास पर पहुँचा तो महाशय जी की धर्मपत्नी श्रीमती सविता रानी से भेंट हुई। उन्होंने मुझे अवगत कराया कि महाशय जी इस समय अस्वस्थता के कारण सो गये हैं और आपके लिए यह पत्र दे गये हैं। उन्होंने मुझे बिठाया और जलपान भी कराया।

महाशय जी के पत्र के साथ १५०० रुपये आर्य लोक वार्ता के लिए रखे हुए थे। मैं महाशय जी से बिना मिले लौट आया।

दि. ०८.०६.२०१६ को महाशय जी सो रहे थे, और उनकी पत्नी सविता जी जग रही थीं। किन्तु आज जब मैं इन पंक्तियों को लिख रहा हूँ उनकी पत्नी सविता जी सो चुकी हैं और महाशय जी जाग रहे हैं। यही ईश्वरीय व्यवस्था है, जिसके समक्ष हम सभी नतमस्तक होने के लिए विवश हैं। दिवंगता धर्मशीला कर्मशीला सविता जी को आर्य लोक वार्ता की विनम्रतापूर्वक श्रद्धांजलि!

वर्षों से मेरी इच्छा थी कि मैं महाशय जी का जीवनवृत्त आर्य लोक वार्ता में प्रकाशित करूँ किन्तु वे हर बार अपने लेख, भजन, कविताएँ तो मेरे पास भेजते थे, अपने बारे में कुछ लिखने प्रकाशित करने से बचते थे। इस बार मेरे आग्रह पर महाशय जी ने कुछ पंक्तियाँ अपने बारे में लिखकर दी हैं जिन्हें मैं उन्हीं के शब्दों में पढ़ें-

"मेरा जन्म बहावलपुर (पाकिस्तान) में १५ अगस्त १६२६ को हुआ। पढ़ाई एवं वैदिक ज्ञान, स्वामी दयानन्द की जीवनी, गायत्री मंत्र एवं आर्य समाज क्या कहता है- यह सब अपने माता-पिता जी से एवं डी.ए.वी.स्कूल के अध्यापकों से जानकारी क्षेत्र पाकपटन जिला मन्टगुमरी (अब पाकिस्तान) से प्राप्त हुई। इन सब के सम्पर्क से ही आर्य गौरव मेरे जीवन में आया तथा मार्ग दर्शन प्राप्त हुआ। उस समय जो मेरे पिताजी सुनाया करते थे-

धर्म न हिन्दू न बौद्ध है- न ही मुस्लिम जैन।
धर्म चित्त की शुद्धता है धर्म ही शान्ति सुख चैन।।
धर्म-कर्म तो सब कहे पर समझे न कोय।
धर्म परख जानो तभी जन-जन के हित होय।।
मन्दिर-मस्जिद जो भटकते रहते न मिला भगवान।
सेवा करुणा प्यार करते रहो स्वयं बनोगे भगवान।।
भीतर बाहर स्वच्छ से करते रहो व्यवहार।
सत्य प्रेम करुणा जागे यही धर्म का सार।।

यही कविता जब पिता जी अपने क्षेत्र में सबको सुनाते थे और साथ ही सन्ध्या करवाते तो हमें तथा मुहल्ले को सत्य ज्ञान बताते थे तो सब जाति के परिवार एक हो जाते थे। यही विचार मेरा परिवार लखनऊ में जन-जन तक पहुँचा रहा है।

आप सब जानते हैं वैदिक ज्ञान सीमित नहीं इसलिए मैं शंका-समाधान विद्वानों से करता रहता हूँ फिर अपनी ओर से पर्चे छपवाकर तथा स्वामी दयानन्द जी की फोटो-बैनर छपवाकर निःशुल्क बांटता रहता हूँ।

देश विभाजन के बाद हम पाकपटन के फिरोजपुर आ गए। फिरोजपुर में पिता जी रेलवे में काम करते थे। मुझे भी रेलवे रनिंग शेड में मशीन शाप में दिनांक ०८.१०.१६४७ को भरती करवा दिया। वहीं से नवम्बर १६५५ में लखनऊ वर्कशाप में मेरा ट्रांसफर हो गया और यहीं से सीनियर जे.ई. के पद से ३० जून १६८७ को सेवा निवृत्त होकर सुभाषनगर (भोलाखेड़ा) आलमबाग में रह रहा हूँ।

मेरी शादी फिरोजपुर में ६ अक्टूबर १६५४ को श्रीमती सविता रानी से हो गई जिसने जीवन भर हर कार्य में मेरा सहयोग किया जिसके कारण वेद प्रचार समिति आलमबाग की चारों समाजों में तन मन धन से कार्य करने का मौका मिलता रहा। मेरी तीन बेटियाँ हैं। सब अपने परिवार में सेवा भाव करते हुए खुश हैं। एक पुत्र हमारे साथ परिवार के साथ रह रहा है। हर प्रकार से बहू बेटा ध्यान रखते हैं।

मेरे सामने मेरी पत्नी श्रीमती सविता रानी ०८.०६.१७ को प्रातः २ बजे से २.३० बजे तक गायत्री का जाप करते हुए ईश्वर के चरणों में चली गई। ऐसी मौत किसी किसी को आती है। परमात्मा उसकी दिवंगत आत्मा को सद्गति प्रदान करे एवं परिवार को धैर्य के लिए पं. अखिलेश जी एवं आचार्य सन्तोष जी द्वारा शान्तियज्ञ करवाया गया।"

महाशय जी शतायु हों- इसी कामना के साथ। *-सम्पादक*

(पृष्ठ 1 का शेष...)

जो कार्य मुगल...

१६४१ में लाहौर मुस्लिम लीग अधिवेशन की अध्यक्षता करते हुए उसने अपने लिखित भाषण में कहा-'गांधी जी गलत समझते हैं जो हिन्दू और मुसलमान को दो मजहब के रूप में देखते हैं। हिन्दू और मुसलमान दो मजहब नहीं दो राष्ट्र हैं। राष्ट्र वह होता है जिसकी अपनी निजी संस्कृति होती है, निजी वेशभूषा और रहन-सहन होता है, अपना निजी इतिहास होता है और अपने निश्चित हीरो (आदर्श पुरुष) होते हैं। इन सब ही दृष्टियों से हिन्दू और मुसलमान दो पृथक् राष्ट्र हैं मजहब नहीं।' उसके बाद मुस्लिम लीग का वह विषाक्त आन्दोलन जिन्ना के नेतृत्व में चलता ही रहा तथा एक बार और सन् ४६ के चुनावों में उन्होंने अपनी शक्ति को तोला और सफल हुए। जमीयत उल् उल्मा अहरार मोमिन आदि पार्टियां यो तो सब पाकिस्तान के विपरीत दबी भाषा में बोलती रहीं परन्तु सफल सब जगह मुस्लिम लीग के ही प्रतिनिधि हुए और केन्द्र में एक मिली जुली सरकार बनी। इधर कांग्रेस के नेता ४६ के उस चुनावी आन्दोलन में यह कहते थे हमारे शरीर के टुकड़े हो सकते हैं पर देश के टुकड़े नहीं हो सकते। गांधी जी ने तो यहां तक कहा था- पाकिस्तान की नींव मेरी लाश पर रक्खी जायेगी परन्तु आखिर को वह अभागा दिन भी आया जब जून के महीने में परिस्थितियों की दुहाई देकर कांग्रेस महासमिति के अधिवेशन में शरीर के टुकड़े कराने का भरोसा देने वालों ने देश के टुकड़े होना बहुमत से मान लिया और इस प्रकार कांग्रेस ने मुस्लिम लीग के आगे घुटने टेक दिये। अन्त को वह कालरात्रि भी आई जब १५ अगस्त १६४७ को विश्व की अभूतपूर्व घटना ऋषि-मुनियों के रक्त से सिंचित राम, कृष्ण, शंकर, बुद्ध, दयानन्द, राणा प्रताप, शिवाजी, सांगा, क्षत्रसाल, लक्ष्मीबाई, दुर्गावती, तिलक, गोखले, लाजपतराय और नेता जी सुभाष चन्द्र बोस की भारत माता के दो टुकड़े कर दिये गये। सात सौ साल में मुगलों की तलवार जो काम न कर सकी वह जिन्ना और उसके साथियों ने कुछ ही महीनों में करके दिखा दिया। दिल्ली में घी के दीपक जले बंगाल, पंजाब, सिन्ध तथा फ्रन्टियर में घरों के दीपक बुझने लगे, लाखों नर और नारी खूनी दंगों के फंस गये। यह था उस हिन्दू मुस्लिम ऐक्य के नारे का परिणाम जिसने एक को उभारा और दूसरे को चुप-चुप कहकर यह दिन दिखाया। चलो कोई बात नहीं दो संस्कृतियों का, दो विपरीत सिद्धान्तों और आदर्शों का पृथक्करण है, उस विपत्ति में भी एक गहरी सांस आई आगे को तो चलो यह झगड़ा अब गया, रोज-रोज की हाय-हाय से बचे पर फिर आज?

सच्चाई तो यह है इतना सब कुछ होने के बाद भी भले ही देश में पाकिस्तान बन गया परन्तु वह मनोवृत्ति अभी भी विद्यमान है, और विद्यमान ही नहीं वह और भी विकराल रूप लेने लगी है। उधर हमारे नेताओं का अधिकांश भाग फिर उसी मार्ग का अवलम्बन करने लगा है जिन भूलों ने देश में पाकिस्तान बनवाया है। पाकिस्तान के विषैले समाचार पत्र भारत में अच्छी संख्या में आते हैं जो लोग सहस्रों की संख्या में हारे मर गये, पिट गये का ढोल पीटते आकर दुबारा फिर बस रहे उनका भी अपना आन्दोलन जिसकी ट्रेनिंग वह वहां लेकर आये हैं वह जारी है, इधर भारत के भी मुस्लिम समाचार पत्र अपनी सी पर फिर उतर रहे हैं, नहीं कहा जा सकता कब तक इस नाव में छेद होते रहने दिये जायेंगे?

महाकवि अकबर ने तो उस समय जब हिन्दू-मुस्लिम ऐक्य का नारा लगवाते हुए आठ-दस साल हो लिये थे और मजहबी जनून चढ़ता ही जा रहा था जो बात कही थी, वह आज तो और भी बढ़कर लागू होती है-

कि इतने दिन हुए तो भी
दमे हमदम नहीं मिलते।
घरों से घर मिले हैं पर
दिलों से दिल नहीं मिलते।

और मिलें भी तो कैसे? जिनके राग का केन्द्र बिन्दु भारत नहीं है और जब भी उन्हें प्रेरणा लेने की आवश्यकता होती है तो जो अरब मक्का-मदीना और पाकिस्तान की ओर आँख उठाकर देखते हैं, उनसे और राष्ट्र-प्रेम की आशा? जिनका अधिकांश भाग पांच पांच समय तो नियमित रूप से भारत से बाहर की ओर एक दिन में झांक कर देखता है, एक महीने रोजा रखते हैं और प्रातः छुआरा (खजूर) खाकर जो रोजा यों खोलते हैं क्योंकि छुआरा अरब में पैदा होता है जबकि बाद में पेट भारत की दाल रोटी से भरना है, जिसे कोयल की जगह बुलबुल हिमालय के स्थान पर कोहेतूर, गंगा जल के स्थान पर आबे जमजम, वीरों में शिवा प्रताप के स्थान पर रुस्तम और सोहराब, राजाओं में विक्रम और भोज के स्थान पर हातिमताई और नौशेरवां, वाल्मीकि और व्यास के स्थान पर सुकरात और अफलातून याद आते हैं उनसे और भारतीय दृष्टिकोण की आशा?

(1952 में प्रकाशित लेखक की पुस्तक 'मेरे सपनों का भारत' से सम्पादित अंश)

व्यक्ति-विशेष

श्री पाल प्रवीण

बयासी वर्ष पूर्व मेरठ जनपद के मवाना पुण्यक्षेत्र में श्रीमती शीला एवं श्री प्रियपाल के आंगन में एक दिव्य ज्योति शिशु रूप में अवतरित हुई; जो आगे चलकर यूनियन बैंक ऑफ इण्डिया के सक्षम अधिकारी के स्वरूप में प्रकाशित हुई और उसे पाल प्रवीण नाम से ख्याति मिली। बैंक से सेवानिवृत्ति के बाद भगवद्प्रेरणा से पाल प्रवीण ने सेक्टर-डी, एम.एस.१२०, लखनऊ को अपना आवास बनाया, जो आगे चलकर 'कमलेश कुटीर' से 'योगाश्रम' में परिवर्तित हुआ और अनेक सामाजिक-साहित्यिक गतिविधियों का केन्द्र बना। प्रारम्भ से ही समाजोन्मुखी पाल प्रवीण ने सामाजिक सरोकारों से अपना नाता जोड़ा तथा अपनी बहुआयामी गतिविधियों के बलबूते लखनऊ में एक नया इतिहास रचा। इस इतिहास रचना में उनके द्वारा संचालित आचार्य विद्यासागर फाउण्डेशन तथा प्रभात प्रशांत वालंटियर ब्यूरो ने अहम भूमिका निभाई।

पाल पवीण ने जिन क्षेत्रों का अपने कार्यक्षेत्र के रूप में चयन किया, वे हैं- १.वैदिक सत्संग २.पर्यावरण रक्षा ३.जरूरतमंदों को सहयोग-सहायता ४.सत्य नारायण वेद प्रचार ट्रस्ट ५.आर्यसमाज-आर्य लोक वार्ता। कुल मिलाकर देखा जाय तो श्री पाल प्रवीण आर्य समाज के लिए समर्पित महर्षि दयानन्द के सच्चे भक्त-अनुयायी हैं। इस क्षेत्र में आचार्य विद्यानन्द विदेह तथा आचार्य विद्यासागर दीक्षित उनके प्रेरणास्रोत रहे। विख्यात लेखक डॉ.वेद प्रकाश बटुक तथा आधुनिक गीत-सम्राट श्री भारत भूषण उनके सहपाठी मित्र हैं। श्री पाल प्रवीण एक श्रेष्ठ वक्ता, गायक तथा लेखक और सम्पादक हैं। 'समन्वय पुरुष' और 'आचार्यश्री' जैसे महत्वपूर्ण ग्रंथ उनके सम्पादन कौशल के साक्षात् प्रमाण हैं। गौरवर्ण, लम्बा कद, आकर्षक वेशभूषा तथा केशराशि, छोटे छोटे कदमों की तेज चाल, संगीत की गुनगुनाहट- उनके व्यक्तित्व को विशिष्ट पहचान देती है।

१६६८-६६ के दौरान इं.जे.पी.अग्रवाल के सौजन्य से अनेक जिज्ञासाओं और प्रश्नों से भरे हुए पाल प्रवीण जी की नवोदित आर्य लोक वार्ता के सम्पादक से भेंट हुई, जो मैत्री, बन्धुत्व, सहयोग-साहचर्य, पारस्परिक तालमेल और ऋषि दयानन्द के मिशन को आगे बढ़ाने के अभियान की मिसाल बन गई।

आज पाल प्रवीण 'आर्य लोक वार्ता' के आधार-स्तंभ हैं। भले ही किन्हीं कारणों से उनका नाम हो या न हो। नाम की जगह काम को अहमियत देना उनका स्वभाव है और एक अभिजात्य गर्व से उनका मुखमंडल सदैव ही दीप्त रहता है। आर्य लोक वार्ता के श्री पाल प्रवीण प्राण हैं। उनके कारण ही आज 'आर्य लोक वार्ता' के लखनऊ और पश्चिमी क्षेत्र, दिल्ली और मेरठ तथा उत्तराखंड में अनेक सहयोगी हैं। पाल प्रवीण के परिवार का प्रत्येक सदस्य 'आर्य लोक वार्ता' हेतु समर्पित है। उनकी दोनों बहनें- श्रीमती मधुर भंडारी तथा श्रीमती मिनी स्वरूप संरक्षक के रूप में विराजमान हैं। 'आर्य लोक वार्ता' की समस्त उपलब्धियों, प्रकाशनों में पाल प्रवीण का योगदान रहता है। यह पाल प्रवीण का दमखम है कि 'आर्य लोक वार्ता' की सदस्य संख्या बढ़ती जाती है, वितरण-व्यवस्था में सुधार परिलक्षित हो रहा है। ८२वें जन्मदिन पर शत-सहस्र शुभकामनाएँ!

-डॉ. वेद प्रकाश आर्य

शुभाकांक्षा

मैं पिछले कुछ महीने से ही आपके सम्मानित पत्र के साथ हुड़ा हूँ। 'आर्य्य लोक वार्ता' के सम्पादक महोदय व पत्र के पाठकों से जो स्नेह मिला है, उसे अनुभूत करके मैं अभिभूत हूँ। यही कारण है कि मास के अन्त में आपके पत्र की प्रतीक्षा करने लगता हूँ। इस बार का 'सम्मान समारोह २०१८' का अंक जैसे ही मिला, तो एक बैठक में ही अद्यन्त पढ़ गया, बहुत अच्छा लगा। वस्तुतः दूसरों को समान वे ही दे सकते हैं, जो अहंकार व भ्रम को त्याग देते हैं। 'परगुण परमाणु पर्वतीकृत्य नित्यं निज हृदय विकसन्ति' की भावना बहुत कम लोगों में होती है। डॉ.वेद प्रकाश आर्य भी उन बिरले व्यक्तियों में से एक हैं। लगभग एक दर्जन विद्वानों, समाजसेवियों, कलाप्रेमियों व राष्ट्रनिर्माण में लगे पथिकों का सम्मान करने के कारण 'आर्य्य लोक वार्ता' को मेरी बधाई एवं शुभकामनाएँ। डॉ.वेद प्रकाश आर्य की सद्य लोकार्पित पुस्तक 'धधकते पृष्ठ' की समीक्षाएँ पढ़कर ही आनन्द आ गया। आशा है, शीघ्र ही द्वादश आदित्यों के भी दर्शन होंगे। डॉ.आर्य को मेरी ढेर सारी मंगलकामनाएँ। ठा.विक्रम सिंह के दादा महात्मा लटूर सिंह से पिलखुआ नगर बहुत पहले से परिचित है। इस नगर के सबसे पुराने इण्टर कॉलिज 'राजपूत इण्टर कॉलिज' की स्थापना महात्मा लटूर सिंह ने ही की थी और उस अवसर पर भारतीय सेना के अमर सपूत कर्नल करिअप्पा को इस छोटे से कस्बे में बुलाया था। रामा आर्य 'रमा' और गौरीशंकर वैश्य की कतिताएँ पढ़ता रहता हूँ। दोनों को मेरी शुभकामनाएँ। पाल प्रवीण ने मेरे लेख 'वाल्मीकि रामायण के उत्तरकाण्ड' पर विस्तृत समीक्षा लिखकर मेरा उत्साहवर्द्धन किया था जो उनकी विद्वत्ता व सारग्रहण शक्ति का परिचायक है। आपकी पत्रिका के अनेक पाठकों से मेरा नाम्ना परिचय है। आशा है, परिचय का यह क्रम बढ़ता ही रहेगा।

-डॉ.चन्द्रपाल शर्मा
सहयोग, सर्वोदय नगर, पिलखुआ-245304

***

'आर्य्य लोक वार्ता' का मार्च-अप्रैल २०१८ अंक विनम्र ही के सौजन्य से प्राप्त हुआ। पढ़ा तो आर्य्य लोक वार्ता सम्मान समारोह-२०१८ की सारी स्मृतियाँ चलचित्रवत् मानस पटल पर मन की आँखें देखने लगीं क्योंकि उक्त सम्मान समारोह का प्रत्यक्षदर्शी होने का सौभाग्य मुझे भी मला। कार्यक्रम बहुत ही गरिमापूर्ण ढंग से सम्पन्न हुआ। प्रथम बार सहभाग करने के कारण मेरे लिए विशेष रहा। जिन विद्वानों के अब तक केवल नाम सुने थे उनको प्रत्यक्ष श्रवण कर उन मनीषियों की विद्वता, उत्कृष्ट चिन्तन और संघर्षगाथा से मैं अत्यंत प्रभावित हुआ। मुख्य अतिथि ठाकुर विक्रम सिंह जी के अनुकरणीय विचार और दान शीलता श्लाघनीय है। सर्वश्री डॉ.वेद प्रकाश आर्य, इं.जे.पी. अग्रवाल, कर्मयोगी आनन्द कुमार आर्य आदि विद्वानों के प्रखर विचारों की सम्प्रेषणीयता सराहनीय है। श्री प्रत्यूषरत्न पाण्डेय जी का मंच संचालन सभागार में समुपस्थित श्रोताओं को बाँधे रखने में सफल रहा।

उक्त अंक का सम्पादकीय डॉ.वेद प्रकाश आर्य की बहुचर्चित पुस्तक 'धधकते पृष्ठ' की पृष्ठभूमि अत्यन्त ही सारगर्भित, ज्ञानवर्धक और प्रेरक सजीव शब्द चित्र है। जिसकी प्रसंशा स्वाभाविक करणीय है। समारोह की सफलता हेतु हार्दिक बधाई। अगले अंक में पूर्ववत सभी स्थायी स्तम्भ पढ़ने को निश्चित मिलेंगे, विश्वास है।

आर्य्य लोक वार्ता प्रखर, नहीं पत्र यह मात्र।
उपादेय गुण-ज्ञान से, श्लाघनीय सर्वत्र।।

-राजाभइया गुप्ता 'राजाभ'
जानकी पुरम, लखनऊ

***

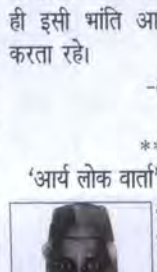

'आर्य लोक वार्ता' माह नवम्बर २०१७ का अंक हमें प्राप्त हुआ। आपने सीतापुर जनपद के वयोवृद्ध सेनानी श्री शान्तिस्वरूप चौधरी के निधन के समाचार से आपने पाठकों को न केवल अवतग कराया है वरन् उनको समुचित सम्मान देते हुए उनके परिवार से भी परिचित कराया है और अपनी संवेदना व्यक्त करते हुए श्रद्धांजलि अर्पित की है। इसके लिये आपको बहुत बहुत धन्यवाद।

सदा की भांति आपका यह अंक महत्व पूर्ण सूचनाओं से भरा हुआ है। श्री चन्द्र पाल शर्मा जी का 'मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम के जीवन पर संदर्भित तथ्यों को व्यापक रूप से जनता के सम्मुख प्रस्तुत कर प्रक्षेपकों से मुक्त करने का एक अच्छा प्रयास है। अच्छा होगा कि विद्वजन श्रीराम के जीवन पर अनुसंधान कर उनके जीवन का सही परिचय दें। अपने समय के महान तार्किक और समर्पित आर्य समाजी पं.रामचन्द्र देहलवी के लेख 'ईश्वर ने दुनिया क्यों बनाई' को उद्धत कर एक अत्यंत कठिन एवं क्लिष्ट विषय पर ईश्वर द्वारा दुनिया की संरचना के प्रयोजन को बहुत ही सरल ढंग से सर्व साधारण को समझाने की चेष्टा की है। आपने इस लेख को अपने पत्र में स्थान देकर आर्य समाजी विचारधारा को प्रचारित प्रसारित कर आर्य जगत की अतुलनीय सेवा की है। आपका सम्पादकीय अनूठा है। तमसीले और विवेचना अद्भुत है। कर्मयोगी श्री आनन्द कुमार आर्य जी जो एक समर्पित, एक निष्ट, उत्साही आर्य समाजी हैं, उनके जीवन पर प्रकाश डालकर हम सब आर्य समाजियों को और कर्मशील होने की प्रेरणा दी है। आर्य लोक वार्ता सदा ही इसी भांति आर्य जगत की सेवा करता रहे।

-कृष्ण स्वरूप चौधरी
गोमती नगर, लखनऊ

***

'आर्य लोक वार्ता' का फरवरी २०१८ अंक प्राप्त हुआ। फागुनी बहार लिये अनेक रंगों में रंगा यह अंक देखने में अति आकर्षक है, मुखपृष्ठ का आलेख 'मैं अपनी झांसी नहीं दूंगी' (डा.वृन्दावन लाल वर्मा) इतिहास की एक झांकी प्रस्तुत करता है। वर्ष १९५४ में 'मध्यमा' (विशारद) की परीक्षा देते समय डॉ. वृन्दावन लाल वर्मा का ऐतिहासिक उपन्यास 'झांसी की रानी' पढ़ा था, और सन् १९५८ में सोहराब मोदी की फिल्म 'झांसी की रानी' मेफेयर टाकीज में देखी थी, लेख पढ़कर वे यादें ताजा हो गईं। सम्पादकीय भी पठनीय एवं विचारणीय है। 'काव्यायन' में गौरीशंकर वैश्य 'विनम्र' के दोहे जो 'ऋषि दयानन्द जयन्ती' के अवसर पर हैं, अच्छे है। यशःशेष डॉ. मिर्जा हसन नासिर की गजल होली की बहार के साथ नासिर साहब की सर्वधर्म सम्भाव की भावना भी प्रदर्शित करती है। कैलाश निगम का नवगीत 'आभूषण हैं वृक्ष' पर्यावरण प्रदूषण हटाने का संदेश देता है। बाँके बिहारी 'हर्ष' के चतुष्पदी (मुक्तक) में हिन्दी इंगलिश का सम्मिश्रण भी अच्छा है। सत्संग के अन्तर्गत 'जिज्ञासा और समाधान' भी पठनीय है। अन्य लेख कवितायें व समाचारों के साथ अन्तिम पृष्ठ पर 'होली की इन्द्रधनुषी छींटें' भी रुचिकर है। कुल मिलाकर अंक पठनीय है।

दयानन्द जड़िया 'अबोध'
बाता नूरबेग, सआदतगंज, लखनऊ-226003

***

क्रान्ति की ज्वाला है 'धधकते पृष्ठ' कृति

आर्य-संस्कृति को प्राणप्रण से समर्पित 'आर्य लोक वार्ता' पत्र के कर्मठ सम्पादक, हिन्दी-निष्ठ साहित्य-मनीषी, प्रखर वक्ता, वेद-मर्मज्ञ, स्वनामधन्य डॉ.वेद प्रकाश आर्य के लोकोपकारी व्यक्तित्व एवं कृतित्व से हिन्दी जगत बहुश्रुत है। लगभग १० वर्ष पूर्व आर्य लोक वार्ता के माध्यम से हुए परिचय ने मुझे उनका असीम स्नेह का भाजन बना दिया। वे मेरे अग्रज तुल्य हैं किन्तु मैं उनका गुरुवत् सम्मान करता हूँ। उन्होंने मुझे कुछ वर्ष पूर्व अपनी बहुमूल्य कृति 'अमृत पुत्रो, सुनो!' प्रदान की जो उदात्त चिन्तन निधि के रूप में मेरे पास सुरक्षित है। उन्होंने मुझे अपनी सद्यः प्रकाशित काव्य रचना 'धधकते पृष्ठ' शुभाशीष स्वरूप इस आग्रह के साथ दी है कि मैं कृति के विषय में निज मन्तव्य लिखकर दूँ। मैं इस असमंजस से हूँ कि मैं महान विद्वान की उस कृति पर, जिसकी भूमिका हिन्दी के शीर्ष पुरुष डॉ.कन्हैया सिंह ने लिखी हो, कुछ कैसे लिखूँ। मेरे मन में समीक्षा भाव आने से पूर्व ही हृदय संकोचभाव से भर उठता है। तथापि गुरु की आज्ञा का पालन करते हुए मैं अपने विचार भाषाबद्ध करने का किंचित प्रयास कर रहा हूँ।

'धधकते पृष्ठ' शीर्षक से ही कृति की गरिमा भासमान हैं इसमें कुल द्वादश सुदीर्घ काव्य-रचनाएँ संग्रहीत हैं जो कवि के युवाकाल में देश की तत्कालीन स्थिति-परिस्थिति में घटित वेदनापूर्ण घटनाओं का सजीव शब्द चित्रण है। विडम्बना यह है कि रचनाओं में वर्णित घटनाक्रम अद्यतन समीचीन और प्रासंगिक है। क्रान्ति-शौर्य-ओज से परि पूरित शब्द-शिल्प से कवि ने भारत माता की चिन्ता और चिन्तन स्वर को सुललित रूप में छन्दबद्ध किया है। रचनाओं की चिरनवीनता एवं प्रासंगिकता ही विशिष्टता है जो भूरिशः स्तुत्य है।

काव्य वाटिका का प्रथम पुष्ण 'धरा का नन्दन' में समर्थ कवि ने भारतमाता के भाल-किरीट कश्मीर के स्वर्णिम अतीत का गौरवगान किया है जो आज पड़ोसी शत्रुदेश पाकिस्तान की कुटिल कुचालों से धूलधूसरित हो रहा है किन्तु वे उसके षडयंत्रों को कभी सफल न होने देने का प्रण करते हैं-

अब उसको कुछ भी
समझाने के क्या माने?
लातों के भूत भला
बातों से कब माने?

'आशाराम की आशा' कविता में स्वदेश रक्षा हेतु प्राणोत्सर्ग करने वाले अमर जवान आशाराम की शौर्यगाथा है-

देख लो माँ पुत्र उसका,
है उसी के काम आया।
भागरक रण से नहीं है,
आज आशाराम आया।

'नयी पूजा नयी आरती' रचना में स्वतंत्रता प्राप्ति के समय भारत के बंटवारे की दारुण व्यथा का चीत्कार है। भारत माँ का करुण क्रन्दन आज भी सुन जा सकता है। विशुद्ध मन कह उठता है-

मैं नया पुजारी आता हूँ,
मन्दिरों! मार्ग से हट जाओ।
मैं नया पुजारी आता हूँ,
मस्जिदों! मार्ग से हट जाओ।

'चाउएनलाई से' काव्य के माध्यम से नेहरू के हिन्दी चीनी भाई भाई और पंचशील नारों की विद्रूपताको धिक्कारते हुए चीन को ललकारा है-

पहले माना पंचशील,
फिर उसकी धज्जियां उड़ा दी।
और हिमालय की चोटी पर
भीम भयंकर तोप चढ़ा दी।

कहते हैं 'घर का भेदी लंका ढाये' आज भारत को भी वाह्य दुष्प्रवृत्तियों के साथ आन्तरिक अराजक शक्तियों से सजग सतर्क रहने की आवश्यकता हैं देश द्रोहियों की कमी कमी नहीं रही, वही स्थिति आज भी है। 'घर के मित्रों से सावधान' रचना में कवि ने सावधान किया है-

अपने हाथों से बने हुए
अपने फंदों से हार गये।
हम गोरी से तो जीत गये
पर जयचन्दों से हार गये।।

कुछ ऐसे हैं जो रात दिवस
बस माओ के गुण गाते हैं
यदि पेकिंग में बरसात हुई
तो छाता यहाँ लगाते हैं।

'सन्धान बदलना ही होगा' काव्य प्रस्तुति के माध्यम से कविप्रवर ने पावन बलिदानी परम्परा से प्रेरणा लेते हुए आतंकी गति विधियों से जूझने हेतु वीरोचित हुंकार भरी है-

आज आग नाचने चली है
अरे वसन्ती परिधानों में।
आज लूट मचने वाली
ऋतुराज तुम्हारी दूकानों में।।

तन बदल चुका है तो तन का
परिधान बदलना ही होगा।
फिर बदल चुका है लक्ष्य अगर
सन्धान बदलना ही होगा।।

'समझौतेबाजी बन्द करो' में मुखरित वाणी से प्रबुद्ध कृतिकार ने कपटी चीन से सीधे टक्कर लेने का ही सुझाव दिया है-

हो चुका बहुत अब
समझौते बाजी बन्द करो।
हे राष्ट्ररथी! अब
समझौते बाजी बन्द करो।

नारी शक्तिस्वरूपा है। नारी की भूमिका सर्वदा वन्दनीय रही है। कवि ने 'तू ही शक्तिस्रोत है नारी' कविता में 'कभी न कहना आँचल में दूध, आँख में केवल पानी' प्राचीन मान्यताओं का खण्डन करते हुए नारी के अनेक रूपों का शब्दांकन किया है। 'चन्दवरदायी का उद्बोधन' में कवि ने कालजयी कवियों का सच्चा दायित्वबोध जगाने की चेष्टा की है। आज सत्ता सुख में डूबे जननायकों को झकझोरने की आवश्यकता है। कवि की वाणी सुनकर ही पृथ्वीराज चौहान की रस-निद्रा टूटी थी। 'दो अनमोल मोती' कविता का शब्द शब्द गुरु गोविन्द सिंह के उन दो लाडलों तरुण पुत्रों की बलिदान गाथा सजल कण्ठ से गा रहा है जिनको क्रूर आततायी द्वारा जीवित ही दीवार में चुनवा दिया गया था। धन्य हैं देश-धर्म पर हँस हँसकर मिटने वाले ऐसे वीर सपूत-

काँपे कर कारीगरों नहीं,
ईंटें पर ईंटे धरे चलो।
पाठकों! रक्त के आँसू से,
अपने अन्तर को भरे चलो।।

माँ एक ऐसी प्राणमयी देवी है जिसके सम्मुख सम्पूर्ण सृष्टि श्रद्धवनत होती है। आचार्य जी ने भी सूक्ष्म तत्व में विद्यमान 'माँ के स्मृति चरणों में' शीश झुकाया है।-

सब प्रिय थे पर प्रियतर थे
वे जिनकी तू नानी।
दुःख पीकर सुख देती थी,
तू सचमुच थी 'सुखरानी'।।

कृति का अंतिम सृजन 'परिचय' प्रस्तुत किया गया है जिसमें आचार्यश्री ने भारत माँ का भावपूर्ण गुणगान किया है।

'धधकते पृष्ठ' कृति का प्रत्येक पृष्ठ ही नहीं अपितु शब्द-शब्द राष्ट्रीय चेतना से ओतप्रोत है। जिसमें है राष्ट्रीयता की गन्ध, देशभक्ति की तीव्रता, जागरण का शंखनाद, क्रान्तिचेता स्वर, वीरोचित भारत का गौरवगान, शौर्य-ओजस-तेजस का अधुनातन मूल्यबोध, स्वदेश प्रेम की प्रज्ज्वलित दीपाभा, त्रिकाल का सत्य शिव सुन्दर स्वरूप। देशभक्ति और राष्ट्रीय चेतना को जीवंत अक्षुण्ण बनाए रखने के लिए ही डॉ.आर्य ने धधकते भावों को काव्यरूप में ढाला है। कृतिकार का गीत काव्य मंच काव्य साधना की छटा लिए हुए है जिसमें लम्बी कविता की गमक, विचारों की स्फूर्ति, ओजपूर्ण स्वर, प्रेरक प्रसंग सोने पे सुहागा उक्ति चरितार्थ करते हैं।

शुभाशा है कि 'धधकते पृष्ठ' की आंच से जनमानस उद्वेलित होगा तथा राष्ट्रप्रेम में परिपक्व होकर भारत माता की रक्षा सुरक्षा के लिए मन-प्राण से कृत संकल्प होगा। हिन्दी जगत में यह कृति कालजयी रचना के रूप में समादृत होगी, ऐसा मेरा अटूट विश्वास है। अशेष सद् कामनाएँ-

हों सुदीर्घ जीवी-सुखी, डॉ.वेद प्रकाश।
सदा धधकते पृष्ठ से, दमके भू-आकाश।।

-गौरीशंकर वैश्य 'विनम्र'
117, आदिल नगर, विकास नगर, लखनऊ

***

धारावाहिक-(82)

मनुष्य का विराट् रूप

-आनन्दकुमार-

(फरवरी अंक से आगे)

(५) दूसरों के काम में अनुचित रीति से हस्तक्षेप करना दुस्साहस है। महाभारत में कहा है-

अनाहूतः प्रविशति ह्यपृष्ठ्क बहु भाषते।
अविश्वस्ते विश्वसिति मूढ्वेताः नराधमः।।

अर्थात्-बिना बुलाये कहीं पर स्वयं पहुँच जाना या किसी काम में कूद पड़ना, बिना पूछे बोलना-बकबक करना, सलाह देने लगना,-जो विश्वास के अयोग्य हो उस पर विश्वास करना, ये मूढ़ के लक्षण हैं। इस प्रकार की अनधिकार चेष्टाओं से मनुष्य का निरादर होता है ओर उसे मूर्ख बनना पड़ता है।

(६) किसी भी प्रकार की कुचेष्टा को हम अनुचित साहस कहेंगे। जैसे-बिना काम के नाम और बिना कमाई के पैसा चाहना, किसी से काम कराके उसकी कमाई मार लेना, खरे सिक्के लेकर खोटा माल देना, मिथ्या विज्ञापन करके दुनिया को धोखा देना और ठगना, यह सोच कर स्वेच्छाचार करना कि कोई हमारा क्या कर लेगा, अपना दोष न मानकर उसे दूसरों पर आरोपित करना-अर्थात् स्वयं चोर होते हुए भी कोतवाल को डाँटना, दूसरों पर धौंस जमाना, नकली रोब दिखाना, भय प्रदर्शन से दूसरों की सद्भावना पाने की इच्छा करना, किसी अवसर का अनुचित लाभ लेना, किसी की विवशता का लाभ लेकर उसके अधिकारों को दबाना या हड़प लेना, दूसरों के सिर पर बैठने का यत्न करना या उनके लिए भारस्वरूप होना, स्वयं अशिष्टता करके दूसरों को शिष्टता की शिक्षा देना, अन्याय करके न्याय माँगना, जानबूझकर आग से खेलना-अपने से अधिक सामर्थ्यवान् से टक्कर लेना, शक्ति से अधिक शौर्य दिखाने का दम भरना-अर्थात् सीधे कलम पकड़ना न आता हो फिर भी पत्रकार होने का दावा करना, दूसरों के बल पर कूदना और मँगनी की वस्तु से अपना ठाठबाठ दिखाना तथा उधार के पैसों से मौज करना, आदि।

इस प्रकार के प्रमादपूर्ण कार्यों में किसी को क्षणिक सफलता भले ही मिल जाए, परन्तु अन्त में इनसे स्थायी हानि होती है। कोई भी व्यक्ति बहुत दिनों तक दुनिया की आँखों में धून झोंककर अपना प्रयोजन सिद्ध नहीं कर सकता। स्वेच्छा- चारिता और वंचकता के परिणामस्वरूप मनुष्य का एक न एक दिन पराभव अवश्य होता है। इसलिये इस प्रकार के साहस सराहनीय नहीं कहे जा सकते। इनसे अपनी शक्ति का दुरुपयोग होता है।

उत्तेजितावस्था में कोई घोर कर्म करना या दिनदहाड़े डाका डालना ही अनुचित साहस नहीं है। अनुचित साहस तो मनुष्य साधारण अवस्था में और मामूली कामों में कर सकता है और बहुत से लोग करते ही हैं। उपर्युक्त उदाहरणों से यह स्पष्ट हो गया होगा। प्रत्येक असामयिक एवं मर्यादाविरुद्ध कर्म अनुचित साहस माना जाता है। बुद्धिमान् को यथायोग्य कर्म यथाकाल और यथोचित ढंग से ही करना चाहिये।

(ग) असावधानी- अन्त में हम कुछ ऐसी असावधानियों की ओर पाठकों का ध्यान आकर्षित करना आवश्यक समझते हैं, जिनसे मनुष्य की अभद्रता और अनुभवहीनता प्रकट होती है।

(१) लेन-देन में असावधानीः- सबसे अधिक भूलें लोग लेन-देन में करते हैं। इसका अर्थ रुपये-पैसे की गिनती करने में गलती करना नहीं है। अर्थ यह है-लेने वाले चाहते हैं कि कम से कम वस्तु या काम का अधिक से अधिक मूल्य मिले और यथासंभव पेशगी मिले। इसके विपरीत, देने वाले चाहते हैं कि अधिक से अधिक वस्तु या काम का कम से कम दाम देना पड़े और जितनी ही देर से देना पड़े अच्छा है। इस प्रकार की अर्थ-लोलुपता से व्यवहार में गड़बड़ी आ जाती है। देने वाले को चाहिये कि वह किसी वस्तु का उचित समय पर उचित मूल्य देने में न चूके और लेने वाले पर किसी प्रकार का उपकार न प्रकट करे। इसी प्रकार लेने वाले को चाहिये कि वह किसी के अनुग्रह का नहीं, अपनी सेवा का ही मूल्य ले और देने वाले को पूर्णतया सन्तुष्ट करने के बाद ही ले। इससे दोनों का सम्मान और परस्परिक विश्वास बना रहता है। बृहदा-रण्यक में इसका एक सुन्दर दृष्टान्त है। महाराजा जनक को महर्षि याज्ञवल्क्य ने कुछ ज्ञानोपदेश दिया। उसके बदले में जनक उन्हें भारी दक्षिणा देने लगे। याज्ञवल्क्य ने कहा-'राजन्, मेरे पिता का उपदेश है कि शिष्य को भलीप्रकार बोध कराये और कृतार्थ किये बिना दक्षिणा न लेनी चाहिये। महर्षि का यह आदर्श प्रत्येक स्वाभिमानी पुरुष के लिये अनुकरणीय है। काम को पूरा करके ही अधिकारपूर्वक उसका पारिश्रमिक लेना चाहिये। देने वाले को भी कभी पिछड़ना नहीं चाहिये।

पैसे के ही नहीं, अन्य प्रकार के लेन देन में भी बहुत-से लोग असावधान रहते हैं। कितने ही ऐसे व्यक्ति मिलेंगे जो दूसरों से माँगते तो बहुत हैं, लेकिन स्वयं किसी को कुछ देने में आनाकानी करते हैं। ऐसे भी बहुत मिलते हैं, जो मंगनी की चीज समय पर वापस करना नहीं जानते। उन लोगों को देखिये जो खाना जानते हैं, खिलाना नहीं जानते; दूसरों से आदर-सत्कार लेने को उद्यत रहते हैं, परन्तु स्वयं मान-दान में कृपण होते हैं। दूसरों से भेंट लेकर कुछ लोग धन्यवाद भी नहीं देते; किसी का पत्र पाकर या तो उत्तर नहीं देते और यदि देते भी हैं तो अधूरा। कौन ऐसा है जो दूसरों का सहयोग नहीं चाहता? लेकिन कितने ऐसे हैं जो स्वयं दूसरों के साथ सहयोग चाहते हैं? इस पर विचार कीजिये तो ज्ञात होगा कि सहायता लेना तो सब चाहते हैं, परन्तु देना देना बहुत कम लोग चाहते हैं।

व्यावहारिक जीवन तो आदन-प्रदान से ही चलता है। उसमें जो सावधान नहीं रहता, वह अन्त में घाटे में रहता है। लेन-देन की साधारण त्रुटि भी लोगों को बहुत खटकती है। यदि आप चाहते हैं कि दूसरे आप के काम आयें तो आप भी उनके काम आइये।

(२) समय का ध्यान न रखनाः- अपने और दूसरों के समय का ध्यान न रखना भी मनुष्य की एक बड़ी भूल है। बहुत से लोग कहीं पर ठीक समय से पहुंचने और किसी से ठीक समय पर मिलने में असावधान रहते हैं। इससे काम तो बिगड़ता ही है, उनकी लापरवाही भी साबित होती है। कुछ लोग समयानुसार व्यवहार में चूक जाते हैं और कुछ तो समय-कुसमय की परवाह ही नहीं करते। वे अकालमेघ की तरह जब जहां चाहते हैं, पहुँच जाते हैं और दूसरों की सुविधा असुविधा का विचार नहीं करते।

(मनुष्य का विराट् रूप से साभार, क्रमशः)

व्याख्यान माला (4)

ईश्वर ने दुनिया क्यों बनाई?

-शास्त्रार्थ महारथी पं. रामचन्द्र देहलवी-

जीवात्मा अपनी योग्यतानुसार मेरे ज्ञान के बल पर अपना विकास करे, अपनी उन्नति करे। और प्रकृति के अन्दर जितनी भी योग्यता है उससे विभिन्न प्रकार की वस्तुएं बन सकती हैं वह मैं अपनी कारीगरी से जाहिर कर दूं। तीनों का वजूद सफल हो जायेगा इसीलिए भगवान् ने यह जगत् उत्पन्न किया है। औरों के यहां इस प्रश्न का 'ईश्वर ने दुनियां क्यों पैदा की?' कोई माकूल उत्तर नहीं है।

मुझे बल है, मैं ५३ साल से इस प्रचार कार्य को कर रहा हूं, शास्त्रार्थ मैंने किए हैं- मैं यह बात अभिमान से या अपनी योग्यता के आधार पर नहीं कहता हूं- मैं यह बात सच्चे सिद्धान्त के आधार पर कहता हूं, हमारा हथियार अच्छा है और उसी के आधार पर हम कह सकते हैं कि दुनियां के तीन से कम अनादि पदार्थ वालों का सिद्धान्त अधूरा हैं, पूरा नहीं है। अकेले खाविन्द हो तो क्या परिवार बढ़ेगा? कदापि नहीं। गृहस्थ को एक छोटा जगत समझ लीजिए। इसमें ब्रह्म की जगह खाविन्द, प्रकृति की जगह स्त्री है और जीवात्मा के स्थान पर बच्चे हैं। परिवार इन तीनों के होने से ही पूरा होता है। कोई आदमी अपने घर पर अकेला रह रहा था। किसी ने पूछा, 'क्या बात है भाई शादी नहीं की?' कहने लगा, 'कोशिश तो बहुत की लेकिन शादी होती ही नहीं।' और कहीं हो भी गई तो होने के बाद सन्तान न हुई। तो तब तक सन्तान न हो जाए, नामुकम्मल परिवार कहलायेगा। पूरा कब कहलायेगा? जब बच्चे भी हों, देवी भी हो और स्वयं भी हो। इसी प्रकार इस ब्रह्माण्ड में परमात्मा है, जीवात्मा है और प्रकृति है। इन तीनों से ही जगत की पूर्णता है इसलिए हीगल फिलॉस्फर की वह उक्ति कि 'What so ever is, is according to reason and what is according to reason that is.' संसार की सभी वस्तुओं के लिए उचित बैठती है। दुनियां में हर चीज अक्ल के मुताबिक है।

यह खयाल या प्रश्न कि 'ईश्वर ने दुनिया क्यों बनाई?' यह इसलिए पैदा होता है कि इस दुनिया में आदमी जो भी काम करता है अपनी गरज को लेकर करता है। मनुष्य का यह स्वभाव बन गया है। कोई आदमी इलेक्शन में खड़ा होता है, क्या जनता की भलाई के लिए? नहीं! बिल्कुल नहीं! स्पष्ट कथन है। उसका अपना स्वार्थ होता है जिसे वह दृष्टि में रखकर चुनाव लड़ता है। चाहे वह इसके द्वारा प्रतिष्ठा चाहता हो चाहे शोहरत चाहता हो या धन चाहता हो। तो ज्ञात हो गया कि मनुष्य सारे कार्य स्वार्थवश करता है, अपनी गरज को लेकर करता है, उसी को मुख्य या मुकद्दम रखता है। तो लोगों ने इसी आधार पर ईश्वर के बारे में भी सोचा और ख्याल किया कि ईश्वर की भी दुनिया की उत्पत्ति में कोई गरज है। मैं कहता हूं कि दुनियां के बनाने में खुदा की कोई गरज नहीं है और यदि कोई Impetus है तो यही है कि अगर मैंने अपने इल्म को, अपनी कारीगरी को दुनियां में न जाहिर किया तो मैं निकम्मा रहूंगा, useless रहूंगा। यही कारण है कि जिसकी वजह से ईश्वर जगत को अनन्तकाल से उत्पन्न करता चला आ रहा है। यह सिलसिला अटूट है।

जीवात्मा मौजूद है। परमात्मा ने जगत बना दिया। जीवात्मा को शरीर प्रदान करके ईश्वर कहता है कि "मैं तुझे मनुष्य का शरीर प्रदान करता हूं जिससे तू मननशीलता से काम करे। जैसे मैंने मननशीलता से जगत को बनाया है तू भी मननशीलता से काम कर। तू भी मननशीलता से अपना छोटा जगत बना सकता है। तेरे को मैं ज्ञान प्रदान करता हूं (सृष्टि के आदि में भगवान ने वेदों का ज्ञान दिया) तू इसके द्वारा उन्नति कर।" इस ज्ञान के आधार पर जीवात्मा ने उन्नति और अवनति करनी आरम्भ की। दोनों काम कर सकता है न। कहना मान भी सकता है और न भी माने, फर्मांबरदारी करे, और न भी करे दोनों बाते हैं। Capricious will है न जीवात्मा की- जीवात्मा स्वतंत्र है, जीवात्मा चाहे अच्छा करे चाहे बुरा करे, उसकी मर्जी है और इसी के लिए सजा और जजा है बाकी और योनियों वाले जीवात्माओं के लिए नहीं है। क्योंकि बाकी तो जेलखाने के कैदी हैं, वह तो जहां हैं तहां हैं। वह तो उसी महदूद दायरे में रहते हैं आगे नहीं निकल सकते। इन्सान के लिए ऐसा नहीं है। वह स्वतंत्र है। तो वह अपनी इन्द्रियों को अपने मन को और अपनी बुद्धि को जिस तरह चाहे वैसे प्रयोग में लावे। चाहे अच्छी तरह काम में लाए, चाहे बुरी तरह काम में लाए। दुनियां में पाप और पुण्य और कुछ नहीं है केवल अपनी ताकत का गलत वेजा इस्तेमाल पाप है और बजा या उचित इस्तेमाल पुण्य है। अतः अपनी शक्ति का उचित प्रयोग करें या अनुचित करें। भगवान् ने सब कुछ जता दिया और जताने के बाद शरीर दे दिया और कह दिया कि अब तो उचित अनुचित का विचार करके अपना कार्य करता चला जा। यदि वह अपनी शक्तियों का उचित उपयोग करता है तो दुबारा भी मनुष्य योनि प्राप्त कर लेगा। किन्तु शक्ति का अनुचित प्रयोग करने पर ईश्वर उसको मनुष्य योनि योग्य नहीं समझता और उदसे नीची योनि में भेज देता है क्योंकि उसने दूसरों को नुकसान पहुंचाया है, अपनी स्वतंत्रता का गलत इस्तेमाल किया। कैसे? इस मिसाल से आप समझ जायेंगे। एक बच्चा स्कूल में जाता है। लेकिन बच्चा बड़ा उद्दण्ड है। किसी की कापी फाड़ देता है, किसी की किताब फाड़ देता है, किसी की स्याही उड़ेल देता है, किसी को मारने लगता है, किसी के कान खींच लेता हो, खूब शरारत करता है, मास्टर उसके संरक्षक से शिकायत करते हैं कि 'तुम्हारा बच्चा ठीक नहीं है, उसको मना कीजिये। अगर आगे यह अच्छी तरह बरतेगा तो उसको स्कूल में रखेंगे वर्ना निकाल देंगे। लेकिन पुरानी आदत है, जल्दी छूटती नहीं है। इसलिए क्या हुआ कि बच्चा दुबारा स्कूल में गया तो उसने फिर वही शरारत करनी शुरू की। मास्टर ने उसके पिता को लिख दिया कि आपका बच्चा स्कूल में नहीं आ सकेगा। इसलिए आप इसे स्कूल न भेजिये, हमने इसे स्कूल से निकाल दिया है, वह अन्य बच्चों पर बुरा प्रभाव डालता है। इस पर बाप बहुत नाराज हुआ लड़के पर और कहने लगा कि 'मैंने तुझे मना किया था कि तू आगे ऐसा काम न करना और तुझे आजमाइश के लिए स्कूल भेजा था। लेकिन

आजमाइश में भी तू बाज नहीं आया और शरारतें कीं। अब तुम यहीं रहो। तुम्हें हम बाहर नहीं निकलने देंगे। पेशाब और पाखाने के लिए भी पूछ के यहीं जाओ। बाहर बिल्कुल नहीं जाना है। खाने व पीने के लिए भी पूछ कर जाना।' जैसे अपने बच्चे को बाप ने कैद कर दिया। इसी प्रकार परमात्मा, उन जीवात्माओं को जो उसकी आज्ञा का पालन नहीं करते हैं, उसकी हिदायतों के बर्खिलाफ चलते हैं उन्हें दूसरी नीची योनियों में गधा, कुत्ता आदि में भेज देता है। यहां ये महदूद दायरे में रहते हैं उससे आगे नहीं जा सकते। इस प्रकार उन्हें कैद कर देता है।

इन्सानी जिस्म में तो जीवात्मा दोनों जगह यक सां है। गवर्नमेंट के कैदखाने में भी इन्सानी जिस्म में है और स्वतंत्र स्थान में भी इन्सानी जिस्म में। मैं व्याख्यान दे रहा हूं किन्तु कोई ऐसा काम करूं जिससे मुझे जेलखाने में जाना पड़े तो इसी जिस्म के साथ चला जाऊंगा लेकिन भगवान् का ऐसा कायदा नहीं है। भगवान जब कैद करता है तो जिस्म बदल देता है और अवस्था भी बदल देता है। अब वहां जाकर वह आगे नहीं बढ़ सकेगा। गधे को आज तक यह मौका नहीं हुआ कि वह वेद पढ़े चाहे उस पर हजार वेद लाद दीजिए कहीं शास्त्रार्थ में जाना हो और उस पर वेद लादकर ले जाए जायें तो वह पंडित नहीं कहलायेगा। उनको तो वह बोझ ही है। तो भगवान् ने जीवात्मा से वह चीज (उसकी स्वतंत्रता) छीन ली जिसके वह लायक नहीं है, योग्य नहीं है, या जिसका वह अनुचित प्रयोग करता है तो लड़के का पिता द्वारा कैद किया जाना ईश्वर की व्यवस्था की नकल है। यह कोई नई चीज नहीं है। हम कोई नई चीज पैदा नहीं कर सकते। Invention कहना बिल्कुल गलत है। तमाम नियम मौजूद हैं। इन नियमों के पहचान लेने की और तदनुकूल कोई कार्य करने को ही तो Invention कहते हैं। परमात्मा की साइन्स के नियम हर जगत pervade करते हैं कोई जगह उनसे खाली नहीं है। हमने केवल उन नियमों को जानकर ही किसी का आवष्किार किया जिसे Invention कहते हैं। इसलिये दुनियां में हम जो कुछ भी कर रहे हैं वह भगवान् के तरीके से कोई नई चीज हम न करते हैं और न कर सकते हैं। मैंने जो मिसाल दी थी कि उस्ताद इम्तहान में अपने बेटे को भी नहीं बताता है जो गलत जवाब दे रहा है। उसने उसे स्वयं पढ़ाया है। लोगों ने यही मुझसे पूछा था कि "भगवान् हमें बुरे काम से रोकता क्यों नहीं?" इसलिए नहीं रोकता कि वह इम्तहान का वक्त है। उसे कैसे रोके? वह तो आपकी योग्यता की पूरी जांच करेगा। दूसरे किसी की नकल भी न कर सकोगे। अब पूरी परीक्षण के पश्चात् सजा दी गई है अब उस दोषी जीवात्मा को उसने वहां कैद कर दिया है वह अब एक सीमित दायरे में रहे।

(क्रमशः)

काव्यायन

भ्रष्टाचार

❑डॉ.उमाशंकर शुक्ल 'शितिकण्ठ'

भ्रष्टाचार-देव! तेरी धाक की धमक ऐसी,
चमक - दमक कि सिहरते उजाले हैं।
तू ही एकमात्र वन्दनीय इष्ट 'शितिकण्ठ',
तेरी ही कृपा से ठाठ-बाट ये निराले हैं।
मार पतझार की तो झेलते अभक्त-अंध,
नहीं तेरे भक्त काले कारनामें वाले हैं।
सजे मधुमास मधुपायी माफियों के यहाँ,
या विशिष्ट, शिष्ट माननीयों के हवाले हैं।।

देसु उचियार ऐस कौनु जैस भारत भा,
लोटै अँधियारु मुला आजु ठौर-ठौर पर।
त्याग सिर-मौरु औरु कौनु भवा भूतल मां,
लाग लोभ-लासा का अँबार बौर-बौर पर।
असन-बसन जहाँ रहैं कन्द-मूल पर्न,
सुरा - सुंदरी सुबर्न हुवैं दौर-दौर पर।
बूड़ति गरीब की गोहारि है गोसैयाँ सुनौ,
ठाढ़ भस्टाचार मुहुँ बाये ठौर-ठौर पर।।

-78, त्रिवेणी नगर, डालीगंज रेलवे क्रासिंग, लखनऊ-226020

अच्छे दिन

❑राजाभइया गुप्ता 'राजाभ'

घिसे काँच का चश्मा अकसर प्रश्न करे अनगिन।
द्वेषपूर्ण पूर्वाग्रह कैसे? देखे अच्छे दिन।।
बीत रहा है घना कुहासा, प्राची मुसकाए।
मौसम आज सुहाना कल से, दिशा-दिशा गाये।।
फैल रही हे कीर्ति चतुर्दिक, जो थी नामुमकिन।
माली सींच रहा फलदाई पौधे निष्ठा से।
करे न भूल कभी समझौता, बाग प्रतिष्ठा से।।
ऋतु आने पर जीभर खाना, मीठे फल गिन गिन।।
पारदर्शिता समय बद्धता सर्वोपरि होती।
किन्तु अहर्निश ईर्ष्या पथ में, काँटे ही बोती।।
फिर भी मिलकर ही रहता है, तय हर लक्ष्य कठिन।
पड़े अक्ल में पत्थर जिनके, उनसे क्या आशा।
स्वत्व और मतिहीन बोलते, अरि की ही भाषा।।
नकारात्मक भाव कृतघ्नी, झेल रहा दुर्दिन।
द्वेषपूर्ण पूर्वाग्रह कैसे? देखे अच्छे दिन।।

-616/227, बसंत विहार, निकट विश्वनाथ पार्क, लखनऊ-21

ऋतु वर्णन

ज्येष्ठ

❑रमा आर्य 'रमा'

ऊपर तपता सूर्य है, धरती तवा समान।
'रमा' जेठ की आग से, व्याकुल तन, मन, प्रान।।
तपे तपंता जेठ में, ताप 'रमा' विकराल।
पशु पक्षी व्याकुल हुए, हुए वृद्ध और बाल।।
संस्कार के हित 'रमा', लग्न बड़ी शुभकाम।
वरमावस का व्रत हुआ, शुभ सुहाग के नाम।।
जेठ दशहरा पर्व है, है गंगा में स्नान।
'रमा' पर्व एकादशी, धर्म, कर्म, शुभ जान।।
गये बवंडल लू 'रमा', हुआ जेठ का अन्त।
बैठे तरुवर छांह गहि, राही साधू संत।।

('रमा सतसई' से)

-417/10, निवाजगंज, चौक, लखनऊ

देशभक्त होना चाहिये

❑डॉ. कैलाश निगम

शासन वही है जिसमें
नहीं हो भेदभाव
संविधान एक जैसा
सख्त होना चाहिये।
सारे पक्षियों के
घोसलों की रक्षा कर सके
शासन वो सघन
दरख्त होना चाहिये।
जनता ने जिनको चुना है
उनके पास
जनता के हेतु
पूरा वक्त होना चाहिये।
भारत की सत्ता के
सुआसन पे आज फिर
त्यागी, बलिदानी
देशभक्त होना चाहिये।

-4/522, विवेक खण्ड,, गोमतीनगर, लखनऊ

यादों की एक बस्ती

❑डॉ.मिर्ज़ा हसन नासिर

दिल में यादों की एक बस्ती है,
जिससे वाबस्ता मेरी हस्ती है।
हक़ परस्ती न बुत परस्ती ही,
दीन मयकश का मय-परस्ती है।
मौज मस्ती है मश्ग़ला उनका,
अपने हिस्से में फ़ाक़ा-मस्ती है।
इश्क़ करने की तुमने भी ठानी,
मिटने वाली तुम्हारी हस्ती है।
चाँद छूने की है हवस उनको,
हौसलों में परन्तु पस्ती है।
उसने मेरे रक़ीब ही के हाथ,
ख़त मुझे आज भेजा दस्ती है।
जिसको कहते हैं ज़िन्दगी 'नासिर',
ज़िन्दगी को वो अब तरस्ती है।

-जी-02, लोटस रेसीडेन्सी, न्यू हैदराबाद, लखनऊ

हर्ष-चतुष्पदी

❑बाँके बिहारी 'हर्ष'

कर्मानुसार मिल ही जाय फल, नहीं जरूरी है।
फल से भी समस्या को मिले हल, नहीं जरूरी है।
आज जो है, वही हो कल नहीं जरूरी है।
खोटा सिक्का सदा ही जाय चल नहीं जरूरी है।

ऊसर में लगाओ पेड़, नहीं फलता है।
कोई हो चिराग सदैव नहीं जलता है।
जिसकी लाठी उसी की भैंस कहावत है-
भैंस पै लाठी का भी जोर नहीं चलता है।

-अवध मोटर वर्क्स, सिविल लाइन्स, फैजाबाद

कालजयी काव्य

महाराणा प्रताप जयन्ती पर विशेष

महाराणा प्रताप

❑श्रीश्यामनारायण पाण्डेय

यज्ञ-अनल सा धधक रहा था,
वह स्वतंत्र अधिकारी।
रोम-रोम से निकल रही थी
चमक-चमक चिनगारी।।

अपना सब कुछ लुटा दिया
जननी-पद - नेह लगाकर।
कलित-कीर्ति फैला दी है
निद्रित मेवाड़ जगाकर।।

भरा हुआ था उर प्रताप का
गौरव की चाहों से।
फूँक दिया अपना शरीर
हम दुखियों की आहों से।।

जग - वैभव उत्सर्ग किया
भारत का वीर कहाकर।
मात-मुख-लाली प्रताप ने
रख ली लहू बहाकर।।

भीषण प्रण तक किया, रक्त से
समर-सिंधु भर डाला।
ले नंगी तलवार बढ़ा
सब कुछ स्वाहा कर डाला।।

अरावली - उन्नत शिखरों पर
सजता रहा रणों को।
अपने शोणित से धोया था
माँ के मृदु चरणों को।।

बढ़ता रहा प्रताप लगाकर
बाजी निज प्राणों की।
जहाँ हो रही थी वर्षा
चोखे चुभते बाणों की।।

रण-चण्डी को पिला दिया
शोणित-मदिरा का प्याला।
बड़वानल सी धधका दी थी
क्रोधानल की ज्वाला।।

उसके एक इशारे पर
वीरों ने ले तलवारें।
पर्वत-पथ रँग दिये रक्त से
ले शत-शत खरधारें।।

गूँज रही जावर-माला में
उसकी अमर कहानी।
अब तक हल्दीघाटी के पथ
पर है समर-निशानी।।

रक्षा की तलवार उठाकर
समर किया लाखों से।
पोंछ दिये आँसू प्रताप ने
माता की आँखों से।।

निकल रही जिसकी समाधि से
स्वतन्त्रता की आगी।
यहीं कहीं पर छिपा हुआ है
वह स्वतंत्र बैरागी।।

(हल्दीघाटी' महाकाव्य से साभार)

चित्तौड़ दर्शन

❑महाकवि अनूप शर्मा

अब भी जहाँ पर अरावली शिखर-शोभी,
मेघ बरसाता अभिषेक - मिष पानी है।
अब भी समीर के चमर ने अनूप जिसे,
निज अठखेलियों की रंगभूमि मानी है।
सूर्य, चन्द्र आरती उतारा करते हैं सदा,
खगों ने विरद बोलने की बान ठानी है।
जन्म-भूमि वीरों की, निधन-भूमि सैनिकों की,
यह ही चित्तौड़ सतियों की राजधानी है।

ऊँचे चढ़ वारुणी की ओर दृष्टि डालिए तो,
हरित पयोधि-सा तटी में लहराता है।
गिरि की अनुन्नत शिला की शक्यता भी लखे,
बैरी-बीचि विभव यहीं पै टकराता है।
आती जब अधिक आराति की अनी है यहाँ,
मुंड-यूथ कंज-पुंज-सा ही दिखलाता है।
मानो शम्भु पूजन के हेतु विजया के रंग,
संग सरसीरुह समुद्र बहा आता है।

राजस्थान-समाचार

20वां आर्य युवक-युवती परिचय सम्मेलन सम्पन्न

कोटा, ६ मई। सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के निर्देशन में दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के तत्वावधान में २०वां आर्य परिवार युवक-युवती सम्मेलन आर्य समाज कीर्ति नगर, नई दिल्ली में ६ मई २०१८ को भव्य रूप में सम्पन्न हुआ। सम्मेलन में विभिन्न प्रान्तों के आर्य परिवारों से आए युवक-युवतियों ने पूर्ण आत्मविश्वास के साथ अपना परिचय देने के साथ-साथ उन्हें कैसा जीवन साथी चाहिए इस विषय में खुलकर अपने विचार रखे। राष्ट्रीय संयोजक अर्जुन देव चड्ढा ने कोटा आकर बताया कि सम्मेलन में मुख्य अतिथि आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान धर्मपाल आर्य ने अपने संबोधन में कहा कि वर्तमान युग में आर्य मर्यादानुरूप महिला सशक्तिकरण का सफलतम माध्यम है यह परिचय सम्मेलन। युवतियों का विवाह के लिए मंच पर आकर परिचय देना और उनके अन्दर के आत्मविश्वास को बढ़ाने वाला कार्य है। साथ ही इच्छानुरूप जीवन साथी का चयन स्त्री स्वतंत्रता एवं सशक्तिकरण की ओर एक महत्वपूर्ण कदम है।

कुष्ठ रोगियों में आर्य समाज ने बांटी खाद्यान्न सामग्री

कोटा, ३ मई। आर्य समाज जिला सभा कोटा द्वारा वीर सावरकर नगर स्थित कुष्ठ रोगियों की बस्ती में खाद्य सामग्री का वितरण किया गया। आर्य समाज के जिला प्रधान अर्जुनदेव चड्ढा के नेतृत्व में आर्य समाज कोटा के प्रतिनिधि मण्डल ने कुष्ठ रोगियों की बस्ती में जाकर खाद्य सामग्री बांटी जिसमें बिस्किट तथा नमकीन के पैकेट वितरित किये गये। इस अवसर पर सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के महामंत्री श्री प्रकाश आर्य अतिथि के रूप में उपस्थित रहे। कुष्ठ रोगियों के मध्य जाकर इस प्रकार से खाद्य सामग्री इत्यादि बांटने को उन्होंने परोपकार का सर्वश्रेष्ठ कार्य बतलाया है। जरूरतमंद की आवश्यकताओं की पूर्ति सामाजिक दायित्व होती है। इस अवसर पर श्री चड्ढा ने कहा कि इस प्रकार की सेवा के माध्यम से हम संसार का उपकार करना आर्य समाज का मुख्य उद्देश्य है, महर्षि दयानन्द के इसी संदेश को जन-जन तक पहुंचाने का कार्य कर रहे हैं।

उत्तराखण्ड-समाचार

विद्यार्थी जीवन में योग अपनायें : स्वामी रामदेव

विद्यार्थी अपनी शक्ति व सामर्थ्य को पहचानें, अपनी ऊर्जा को अपनी शिक्षा में लगाएं, तनाव रहित जीवन के लिए योग को अपनायें, अपने समय का सदुपयोग करें, अपने माता-पिता के भरोसे का सम्मान करें। उक्त विचार स्वामी रामदेव महाराज ने अंतर्राष्ट्रीय योग शिविर के आयोजक रेजोनेंस के प्रतिनिधि व पतंजलि योग समिति कोटा के प्रतिनिधियों के मध्य व्यक्त किये। पतंजलि योग पीठ हरिद्वार के केन्द्रीय प्रभारी डॉ.जयदीप आचार्य ने कहा कि विश्व योग दिवस के सफल आयोजन के लिए रेजोनेंस की टीम व पतंजलि योग समिति की टीम जन प्रतिनिधियों, प्रशासनिक अधिकारियों, योग संगठनों, धार्मिक व सामाजिक संगठनों से संपर्क करेगी। इस बैठक में रेजोनेंस के सीईओ आशीष शर्मा, सोमवीर तयाल, व भारत स्वाभिमान के राज्य प्रभारी अरविंद पांडे, जिला अध्यक्ष प्रदीप शर्मा व वेदमित्र शामिल रहे।

हरदोई-समाचार

शिवप्रसाद आर्य नहीं रहे

०६.०३.१८। ग्रामीण क्षेत्र में आर्य समाज की अलख जगाने वाले धुरंधर प्रचारक श्री शिवप्रसाद आर्य नहीं रहे। लगभग ८०वर्ष की आयु में उनका *शरीरान्त हो गया। आर्य समाज गोनी* हरदोई के प्रधान श्री विमल कुमार एडवोकेट ने उनका अन्तिम संस्कार वैदिक विधि से सम्पन्न कराया।

बताते चलें कि प्रारंभिक जीवन में वे वेद प्रकाश आर्य के सम्पर्क में आये, जिसने उनकी जीवन धारा को वैदिक धर्म की ओर मोड़ दिया। अच्छे वक्ता, प्रचारक थे। ग्रामीण क्षेत्रों में उनकी अच्छी धाक थी। वाद-विवाद, शास्त्रार्थों में उनकी अच्छी रुचि थी। श्री आर्य के निधन से गोनी क्षेत्र आर्य समाज की दृष्टि से सूना हो गया। वे अपने पीछे एक पुत्री तथा तीन पुत्र छोड़ गये हैं। श्री आर्य प्रति मास 'आर्य लोक वार्ता' गोंडवा डाकघर से प्राप्त कर चार किमी दूर मालपुर में स्व.विष्णु कुमार शुक्ल के पास पहुँचाया करते थे।

बाँदा-समाचार

मनीष जी का निधन

१०.०४.२०१८, बाँदा। कवि, वैदिक प्रवक्ता श्री सुरेन्द्र नाथ पाण्डेय 'मनीष' का अपने पैतृक निवास सिविल लाइन्स, बाँदा में निधन हो गया। आप आर्य समाज बाँदा के प्रधान भी रहे। 'आर्य लोक वार्ता' में आपकी रचनाएँ प्रकाशित हो चुकी हैं। श्री पाल प्रवीण ने स्व.पाण्डेय को श्रद्धांजलि देते हुए उन्हें इस युग का महान् कर्मयोगी बताया है। हार्दिक श्रद्धांजलि!

सीतापुर-समाचार

शान्तिदेवी शुक्ला चल बसीं

भूयश्च शरदः शतात् अर्थात् सौ वर्ष से अधिक जीवित रहने की वैदिक कामनाओं को साकार करती हुई- डॉ. उमाशंकर शुक्ल 'शितिकण्ठ' की माता श्रीमती शान्तिदेवी शुक्ला का १०५वर्ष की आयु में २७ अप्रैल को निधन हो गया। श्रीमती शान्ति शुक्ला सीतापुर के जाने माने वैद्य प्यारेलाल शुक्ल तरीनपुर की पत्नी थीं। वैद्य जी लगभग एक दशक पूर्व दिवंगत हो गए थे।

आत्मा की शांति, सद्गति, गृहशुद्धि इत्यादि के निमित्त आपकी पुण्यस्मृति में यज्ञ २ मई बुधवार का श्री पं.शचीन्द्र मिश्र शास्त्री आर्य समाज सीतापुर के आचार्यत्व में सम्पन्न हुआ। मातृचरणों में 'आर्य लोक वार्ता' की श्रद्धांजलि!

आजमगढ़-समाचार

वीरेन्द्र प्रसाद श्रीवास्तव का निधन

८३, एलवल, आजमगढ़ निवासी श्री वीरेन्द्र प्रसाद श्रीवास्तव का लगभग ८३वर्ष की आयु में देहावसान हो गया। वे सम्प्रति अपने पुत्र के साथ शेखूपुरा कुर्सी रोड, लखनऊ में रह रहे थे और बीच बीच में समय निकालकर आजमगढ़ भी आत जाते रहते थे। स्व.श्रीवास्तव स्वाध्यायशील, कर्तव्य परायण सहृदय इंसान थे। उन्होंने कई वर्ष डी.ए.वी. डिग्री कालेज, आजमगढ़ के पुस्तकालय विभाग में सेवा कार्य किया था। आजमगढ़ की पेंशनर्स एसोशिएशन में भी वे सक्रिय रहते थे। 'आर्य लोक वार्ता' के प्रति उनके मन में जिज्ञासा बनी रहती थी तथा समय निकाल कर वे कार्यालय आ जाया करते थे। श्री कपिलदेव राय विज्ञान प्रवक्ता एवं डॉ.कन्हैया सिंह पूर्व नगर पालिका अध्यक्ष तथा विजय धारी पाण्डेय ने श्रीवास्तव जी के निधन पर गहरा शोक व्यक्त किया है।

समय रहते यदि शासन ने सातवें वेतनमान के एरियर का भुगतान कर दिया होता तो स्व.श्रीवास्तव जी को कितना सन्तोष हुआ होता? अक्सर वे एरियर भुगतान के बारे में पूछा करते थे। सरकार की यह कितनी बड़ी असावधानी है।

नोएडा-समाचार

आर्य समाज नोएडा

आर्य समाज, बी-६६, सेक्टर-३३, नोएडा के वार्षिक साधारण अधिवेशन में वर्ष २०१८-१६ के लिये चुनाव अधिकारी श्री आर.एल.लवानिया द्वारा वार्षिक चुनाव सम्पन्न कराये गये जिसमें निम्न पदाधिकारी निर्वाचित हुए-

श्रीमती गायत्री मीना	प्रधान
श्री रविशंकर अग्रवाल	उपप्रधान
श्री जितेन्द्र सिंह	मंत्री
महिला समाज	
श्रीमती ओमवती गुप्ता	प्रधाना
श्रीमती सरला कालरा	उपप्रधाना
श्रीमती आदर्श बिश्नोई	मंत्री
श्रीमती सन्तोष लाल	कोषाध्यक्षा
आर्ष गुरुकुल शिखा प्रबन्ध समिति(पं.)	
श्रीमती गायत्री मीना	प्रधान
श्री रविशंकर अग्रवाल	उपप्रधान
श्रीमती आदर्श बिश्नोई	सदस्य

(कं. अशोक गुलाटी)

लखनऊ-समाचार

भारतीय भाषा प्रतिष्ठापन राष्ट्रीय परिषद उ.प्र. का वार्षिकोत्सव-2018

भारतीय भाषा प्रतिष्ठापन राष्ट्रीय परिषद, उ.प्र. का वार्षिकोत्सव १८ मार्च २०१८ को बीरबल साहनी पुरावनस्पति विज्ञान संस्थान के सभागार में दोनों संस्थाओं के सहतत्वावधान में आयोजित हुआ, जिसमें प्रो.सुनील वाजपेयी सहित अनेक वैज्ञानिक, विख्यात साहित्यकार एवं अन्य गणमान्य सज्जनों ने भाग लिया। उत्सव के मुख्य अतिथि श्री गोपाल चतुर्वेदी एवं विशिष्ट अतिथि श्री सुरेश कुमार श्रीवास्तव थे। अध्यक्षता श्री महेशचन्द्र द्विवेदी (पूर्व डी.जी.पी.) ने की।

इस अवसर पर हिन्दी के उत्थान हेतु कार्यरत प्रो.विष्णु गिरि गोस्वामी, पूर्व अध्यक्ष, विधि संकाय, लखनऊ विश्वविद्यालय; श्री निमिष कपूर, प्रधान वैज्ञानिक, विज्ञान एवं प्रौद्यागिकी विभाग, नोएडा; श्री विनय कुमार अवस्थी, सभापति, भुवन वाणी ट्रस्ट, लखनऊ; प्रो.शेर सिंह बिष्ट, आचार्य हिन्दी विभाग, कुमायूँ विश्व विद्यालय एवं श्री श्याम प्रकाश देवपुरा, प्रधान मंत्री, साहित्य मंडल, नाथद्वारा को सम्मानित किया गया। 'राजभाषा हिन्दी- उद्भव, विकास एवं भविष्य की संभावनायें' विषय पर संगोष्ठी हुई जिसमें सम्मानित विद्वानों सहित डॉ.मोहन लाल अग्रवाल आदि ने अपने विचार प्रस्तुत किये। इसके अतिरिक्त इस परिषद द्वारा विगत वर्ष में प्रदेश के विद्यालयों में आयोजित सुलेख, अंत्याक्षरी, निबंध एवं वाद-विवाद प्रतियोगिताओं में विजयी ४५ छात्रों को पुरस्कार प्रदान किये गये। भारतीय भाषा प्रतिष्ठापन राष्ट्रीय परिषद की स्मारिका 'हिन्दी-गरिमा-२०१८' का लोकार्पण हुआ। मुख्य अतिथि ने इस परिषद द्वारा हिन्दी को गरिमा प्रदान करने हेतु किये जा रहे प्रयत्नों की सराहना की एवं हिन्दी के उज्ज्वल भविष्य की कामना की। डॉ.उषा सिन्हा एवं श्री राजेश शर्मा ने गोष्ठी का गरिमामय संचालन किया।

श्रीमती आशा श्रीवास्तव दिवंगत

पतंजलि योगपीठ के कर्मठ सदस्य श्री गोपालकृष्ण श्रीवास्तव की धर्मपत्नी श्रीमती आशा श्रीवास्तव का लम्बी बीमारी के बाद दि. ५ मई २०१८ को उनके निवास स्थान ४/१२४, विराम खण्ड, गोमती नगर में निधन हो गया। योगपीठ के अध्यक्ष श्री पीयूषकान्त की देखरेख में उनकी वैदिक विधि से अन्त्येष्टि भैंसागुण्ड घाट पर की गई। दि. ७ मई को श्री जी.के.श्रीवास्तव के आवास पर शान्तियज्ञ का आयोजन वैदिक विद्वान डॉ.वेद प्रकाश आर्य के आचार्यत्व में सम्पन्न हुआ। बड़ी संख्या में श्री जी.के.श्रीवास्तव के पारिवारिक जनों, योगपीठ एवं आर्य समाज के सदस्यों ने यज्ञ में भाग लिया और आहुतियाँ देकर श्रद्धांजलि अर्पित की। यज्ञोपरान्त श्री पीयूषकान्त, श्रीमती मीना दीक्षित (योग प्रशिक्षिका) ने स्व.आशा जी को श्रद्धांजलि अर्पित की। यज्ञ में जी.के.श्रीवास्तव के सुपुत्र तथा पुत्रवधुएँ- आशुतोष एवं पूजा, अभिषेक एवं आकांक्षा यज्ञवेदी पर मौजूद थीं। इसके अतिरिक्त वी.के. श्रीवास्तव, श्रीमती सरोज, श्याम कृष्ण श्रीवास्तव, श्रीमती शशि दीक्षित, जवाहर लाल शाह, सौरभ सिन्हा मंत्री आर्य समाज गोमती नगर इत्यादि गण्यमान व्यक्तियों ने श्रद्धासुमन अर्पित किये।

नामकरण संस्कार

वैदिक संस्कारों की शृंखला में दि.२२.०४.१८, रविवार को ५/५४०, विराम खण्ड, गोमती नगर में श्री अमित ओबेराय एवं श्रीमती नेहा के सुपुत्र का नामकरण वैदिक यज्ञ वेदी पर डॉ.वेद प्रकाश आर्य के आचार्यत्व में सम्पन्न हुआ। बालक का नामकरण सर्व सम्मति से 'अर्जुन' किया गया। आचार्य ने अर्जुन नाम की महत्ता से सभी को अवगत कराया। ज्ञातव्य है कि 'अर्जुन' श्री अरुण ओबेराय एवं श्रीमती गीता ओबेराय का पौत्र है। अमित सम्प्रति अमेरिका में एक कम्पनी में कार्यरत हैं। इस अवसर पर समारोह की प्रशंसनीय व्यवस्था देखने को मिली। यज्ञ की सर्वांगपूर्ण व्यवस्था के साथ प्रीतिभोज का भी सराहनीय प्रबंध किया गया था। उपस्थित नर नारियों ने चि.अर्जुन को अपना आशीर्वाद प्रदान किया।श्रीमती सुरभि चोपड़ा एवं सार्थक चोपड़ा की उपस्थिति उल्लेखनीय रही।

उन्नाव-समाचार

ग्यारह साहित्यकार सम्मानित

उन्नाव, ११.०४.२०१८। 'आचरण' साहित्यिक, सांस्कृतिक एवं शैक्षणिक संस्था उन्नाव द्वारा संजूलता स्मृति में मुख्य अतिथि डॉ.दयाराम मौर्य 'रत्न' तथा डॉ.महेश मिश्र 'विधु' की अध्यक्षता में संस्थापक चन्द्रभान 'चन्द्र' के कल्याणी देवी आवास पर आयोजित १६वें काव्य समारोह एवं सम्मान कार्यक्रम में गौरीशंकर वैश्य 'विनम्र' सहित विभिन्न अंचलों के ग्यारह साहित्यकारों का सारस्वत सम्मान किया गया। इसके बाद चन्द्रभान 'चन्द्र' द्वारा प्रणीत कृति 'लोक गीतांजलि' तथा मासिक पत्रिका 'पत्रकार सुमन' (सम्पादक दयाराम मौर्य 'रत्न') के सद्यः प्रकाशित अंक का विमोचन हुआ जिसके विषय में डॉ.अशोक कुमार गुप्त 'अशोक' ने विस्तार से प्रकाश डाला। काव्य समारोह में गाफिल स्वामी, प्रेम प्रकाश त्रिपाठी, आर.के.सरोज, पं.बेअदब लखनवी, आदित्य कटियार 'अजीब', डॉ.अजय कुलश्रेष्ठ, डा.थम्मनलाल विकल, शिवमोहन यादव, राजबाला धैर्य, विलय लक्ष्मी सम्मानित साहित्यकारों के अतिरिक्त सारिका त्रिपाठी, डा.रश्मि कुलश्रेष्ठ, डा.रामवीर सिंह 'वीर', ओम प्रकाश पुरवार, चन्द्रभान 'चन्द्र', अनिल पुरवार, विनय दीक्षित, डा.अशोक गुप्ता आदि सुकवियों ने ललित रचनाओं का पाठ किया जिसका श्रोताओं ने भरपूर आनन्द लिया। कार्यक्रम का संचालन डा.अशोक कुमार गुप्त 'अशोक' संस्थापक बटोही संस्था कानपुर ने किया। समापन श्री चन्द्रभान 'चन्द्र' के धन्यवाद ज्ञापन तथा सुस्वादु भोजन ग्रहण से हुआ। *(गौरीशंकर वैश्य 'विनम्र')*

लखनऊ-समाचार

आर्य समाज अलीगंज का वार्षिक उत्सव

"आर्य समाज अलीगंज (महावीरगंज) के उन्नायक स्व.आचार्य ओजोमित्र शास्त्री वैदिक साहित्य के उद्भट विद्वान थे। शास्त्री जी ने अष्टाध्यायी महाभाष्य के प्रमाणों से स्पष्ट किया था कि आर्य शब्द को 'आर्य्य' लिखना सर्वथा संगत प्रामाणिक और शुद्ध है। 'आर्य लोक वार्ता' प्रारम्भ से ही 'आर्य्य' शब्द को इसी रूप में लिखता आया है, जो मौलिक और दुरुस्त है। शास्त्री जी का यह समाधान 'आर्य लोक वार्ता' में दो बार प्रकाशित हो चुका है।" इन शब्दों में आर्य समाज महावीर गंज के वार्षिकोत्सव के अवसर पर 'आर्य लोक वार्ता' के प्रधान सम्पादक डॉ.वेद प्रकाश आर्य ने आर्य समाज महावीरगंज के उन्नायक एवं विस्तारक आचार्य ओजोमित्र शास्त्री को श्रद्धांजलि अर्पित की।

आर्य समाज का वार्षिक उत्सव २९, ३० अप्रैल तथा १ मई २०१८ को समारोह पूर्वक मनाया गया, जिसमें आर्य जगत के लब्धप्रतिष्ठ विद्वानों, भजनोपदेशकों, साधु-संन्यासियों ने भाग लिया जिनमें वेद विदुषी डॉ.निष्ठा विद्यालंकार, आचार्य विश्वव्रत, महात्मा जलेश्वर मुनि, राधेश्याम सिंह वेदोपदेशक, सत्यप्रकाश भजनोपदेशक(बिहार) स्वामी वीरेन्द्र सरस्वती, महात्मा प्रेममुनि जी के नाम प्रमुख है। कार्यक्रमों का संचालन श्री सत्य प्रकाश आचार्य बाराबंकी ने दक्षतापूर्वक किया। उत्सव में वेद सम्मेलन, संस्कृत सम्मेलन तथा मद्य निषेध सम्मेलन आयोजित किये गये।

कन्या उपनयन संस्कार

दिनांक २५ अप्रैल, दिन बुधवार को प्रातः १०.३०बजे से आर्य समाज इन्दिरा नगर, लखनऊ में प्रधान श्रीमती कान्ति कुमार एवं श्री अक्षय भाई की सुपौत्री लावण्या (सुपुत्री इं.अंशुल कुमार एवं श्रीमती ऋचा कुमार, मलेशिया) का यज्ञोपवीत संस्कार आयोजित किया गया। वैदिक संस्कार अखिलेश शास्त्री द्वारा सम्पन्न कराया गया तथा वैदिक विद्वान् डॉ.वेद प्रकाश आर्य, प्रधान सम्पादक आर्य लोक वार्ता द्वारा प्रवचन एवं आचार्य विश्वव्रत जी की महिला मण्डली द्वारा भजन गायन। उपस्थित सम्मानित सुधिजनों ने कु.लावण्या को शुभाशीष एवं भिक्षादान प्रदान किया।

बालिका सशक्तीकरण एवं वैदिक उपनयन संस्कार के उपलक्ष्य में कु.लावण्या के पिताश्री इं.अंशुल कुमार ने एक लाख गयारह हजार एक सौ गयारह रुपये आर्य समाज इन्दिरा नगर को भूतल पर सम्पूर्ण टाइल्स लगवाने हेतु दान दिया। साथ ही श्रीमती सुशीला वार्ष्णेय पत्नी स्व.मदन मोहन वार्ष्णेय ने अपने परनाती अक्षय कुमार अग्रवाल के जन्म के शुभअवसर पर इसी कार्य हेतु ५१ हजार रुपये का दान देकर सहयोग किया। कु.लावण्या के वैदिक यज्ञोपवीत संस्कार के इस अवसर पर आर्य समाज इन्दिरा नगर को ५० स्टील कुर्सियों के लिए ३५ हजार रुपये का दान सर्वश्री राज कुमार गुप्ता, बी.एल.गुप्ता, इं.आशेष अग्रवाल, डा. प्रतुलराज गुप्ता, इं.विनोद प्रसाद गुप्ता, विंग कमाण्डर किंशुक कुमार एवं डा.निशा अग्रवाल ५ हजार रुपये प्रति सदस्य ने दान प्रदान किया है।

कार्यक्रम में विशेष रूप से उपस्थित वैदिक विद्वतगण अखिलेश शास्त्री, डा.वेद प्रकाश आर्य एवं श्री विश्वव्रत शास्त्री की महिला मण्डली-प्रियंका शास्त्री, कविता सहगल, यशोदा शर्मा का आभार प्रकट किया गया। साथ ही मंत्री श्री अभय मुनि, कोषाध्यक्ष श्री डोरीलाल आर्य एवं उपमंत्री सुरेन्द्र निगम ने विशेष सहयोग के लिए आभार एवं धन्यवाद प्रकट किया। कार्यक्रम का समापन प्रीतिभोज के साथ हुआ।

ऊर्मिला शास्त्री दिवंगत

'माता निर्माता भवति' सूक्ति को चरितार्थ करने वाली विश्वमित्र, सर्वमित्र एवं अखिलमित्र की पू.माता एवं स्व.आचार्य ओजोमित्र शास्त्री की धर्मपत्नी श्रीमती ऊर्मिला शास्त्री का दि. ४ मई २०१८ को लगभग ८४ वर्ष की आयु में देहान्त हो गया। चंदन काष्ठावेष्ठित चिता पर उनका संस्कारविधि के विधानानुसार अन्त्येष्टि संस्कार भारी संख्या में नर नारियों की मौजूदगी में किया गया।

६ मई २०१८ को सी-२०२८, कल्याणी विहार, कमता चिनहट लखनऊ में उनकी पुण्य स्मृति में शान्तियज्ञ एवं शोक सभा का आयोजन किया गया जिसमें आर्य समाज तथा सत्यनारायण वेद प्रचार ट्रस्ट के सदस्य बड़ी संख्या में उपस्थित थे। आचार्य विश्वव्रत, नवीन कुमार सहगल, कविता एवं यशोदा शर्मा, प्रियंका शास्त्री इत्यादि ने यज्ञ सम्पन्न कराया। शोक सभा की अध्यक्षता चन्द्रभान सिंह ने की तथा संचालन आचार्य सत्य प्रकाश तथा नवीन कुमार सहगल संयुक्त रूप में किया। पं.दीनानाथ शास्त्री, प्रेममुनि जी, महेन्द्र कुमार सिंह, पाल प्रवीण, वंशीलाल आर्य, श्रीमती अर्चना, स्वामी वीरेन्द्र सरस्वती तथा डॉ.वेद प्रकाश आर्य ने दिवंगता को भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित की। अतिथियों का मित्र-परिवार ने आभार प्रदर्शन एवं सत्कार किया।

महिला शक्ति मण्डल

दि.२१.०४.२०१८। डॉ.शान्तिदेव बाला द्वारा संस्थापित महिला शक्ति मण्डल न्यास द्वारा शालिग्राम अतिथि गृज महानगर में आयोजित सम्मेलन में 'धधकते पृष्ठ' काव्य के रचयिता आर्य लोक वार्ता के प्रधान सम्पादक डॉ.वेद प्रकाश आर्य विशेष कार्याधिकारी श्रीमती निमिषा वाजपेयी का हार्दिक स्वागत किया गया। श्रीमती गीता गुप्त की अध्यक्षता में सम्पन्न हुए समारोह का संचालन श्रीमती वीना गौतम महामंत्री ने किया। समारोह में शक्ति मण्डल की वरिष्ठ सदस्यों को सम्मानित किया गया। डॉ.वेद प्रकाश आर्य ने इस अवसर पर महिला शक्ति मण्डल की सदस्यों के प्रति उनके सहयोग के लिए हार्दिक आभार व्यक्त किया। डॉ.वेद प्रकाश आर्य ने 'धधकते पृष्ठ' काव्य की रचना 'शक्ति स्रोत है नारी' का पाठ किया जिसका देवियों ने करतल ध्वनि से अभिनन्दन किया।

'धधकते पृष्ठ' काव्य का सर्वत्र स्वागत

'धधकते पृष्ठ' काव्य की उत्तरोत्तर बढ़ती हुई लोकप्रियता तथा स्वागत के उत्साहवर्द्धक समाचार लगातार प्राप्त हो रहे हैं। दि.०८.०४.१८ को आर्य समाज डालीगंज के साप्ताहिक अधिवेशन में 'धधकते पृष्ठ' काव्य का हार्दिक स्वागत किया गया। आर्य समाज सत्संग में उपस्थित प्रायः सभी सदस्यों ने 'धधकते पृष्ठ' काव्य की प्रतियाँ सहयोग राशि देकर प्राप्त कीं तथा पुस्तक के रचनाकार डॉ.वेद प्रकाश आर्य का स्वागत किया। डॉ.आर्य ने पुस्तक 'धधकते पृष्ठ' की रचनात्मक पृष्ठभूमि के बारे में रोचक जानकारी दी तथा 'तू ही शक्ति स्रोत है नारी' कविता की कुछ पंक्तियों का पाठ किया; जिसका समस्त सदस्यों ने भावाकुल अभिनन्दन किया। इस अवसर पर श्री देवेन्द्र नाथ दीक्षित, डॉ.अरविन्द नाथ पाण्डे, आलोक चौधरी, डा.मदालसा पाण्डेय, श्री प्रेमचन्द्र शर्मा, श्री चन्द्र प्रकाश वर्मा तथा आनन्द चौधरी एडवोकेट एवं ध्यानयोग के मर्मज्ञ श्री सेवकराम जी भी मौजूद थे।

शिक्षिका की कर्तव्य परायणता

दि.०२.०४.२०१८। लामार्ट के बच्चों को स्कूल से लेकर घर पहुँचाने जा रही वैन में अचानक ड्राइवर की घोर लापरवाही से न जाने कैसे खौलता हुआ गर्म पानी दो बच्चियों के पैरों पर गिर गया और वे जल जाने की पीड़ा से चीखने लगीं। जुगौली रेलवे क्रासिंग के पास घटी इस घटना का दर्दनाक पहलू यह था कि ड्राइवर वैन छोड़कर कहीं भाग गया। लगभग दो बजे, ग्रीष्म की दुपहरी में दो बच्चियों के पैर झुलस गये थे, वे चीख रही थीं और लोगों का आना जाना भी जारी था, किसी ने भी यह जानने की कोशिश नहीं कि आखिर वैन में बच्चे क्यों चिल्ला रहे हैं? तभी लामार्ट की ही टीचर मिस पियर्स स्कूल से छुट्टी होने पर स्कूटी पर उधर से गुजरीं। उनका ध्यान धूप में खड़ी स्कूल की वैन की तरफ गया- बच्चियाँ चीख रही थीं। उन्होंने फौरन बच्चियों के घर का फोन नम्बर लिया और सूचना दी। बच्चियों के अभिभावक आये और उन्होंने अपने साधनों से घर जाकर बच्चियों की समुचित मरहम पट्टी की। कई दिन बाद वे लड़कियाँ स्वस्थ हुईं। वे छात्राएँ थीं- वेदांजलि वाजपेयी, ५६, लक्ष्मण पुरी तथा अनीका कनौजिया रवीन्द्रपल्ली। स्कूल की अव्यवस्था कहें या ड्राइवर की निरंकुशता? किन्तु टीचर की सराहना करनी पड़ेगी जिसने अपने कर्तव्यपालन में किंचित भी विलम्ब नहीं किया।

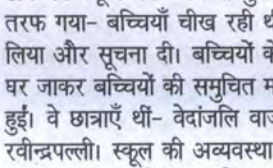

आर्य समाज गोमती नगर का वार्षिक निर्वाचन

दि. ०६.०५.१८ को आर्य समाज गोमती नगर की साधारण सभा की बैठक २/४५२, विनम्र खण्ड, गोमती नगर लखनऊ में सम्पन्न हुई, जिसमें वर्ष २०१८-१९ के लिए निम्नलिखित पदाधिकारी एवं सदस्य सर्व सम्मति से निर्वाचित हुए-

श्री मनोज कुमार मिश्र	संरक्षक
डा. वी. पी. कपूर	प्रधान
श्री आर.पी.श्रीवास्तव	उपप्रधान
श्री बी.जी.पालीवाल	मंत्री
श्री सौरभ सिन्हा	उपमंत्री
श्री शिवधर मौर्य	कोषाध्यक्ष
श्री अमर सिंह	आडीटर
श्री अशोक कुमार साहू	संगठन मंत्री
श्री तेज नारायण शुक्ला	पुस्तकाध्यक्ष
श्री मनोहर लाल माहेश्वरी	अंतरंग सदस्य
श्री श्री लाल जी मौर्य	अंतरंग सदस्य
श्री शंकर दयाल सिंह	अंतरंग सदस्य
श्री मिश्री लाल यादव	अंतरंग सदस्य

(सौरभ सिन्हा, मंत्री)

गृह प्रवेश के अवसर पर वैदिक यज्ञ

तहसील सण्डीला जिला हरदोई के अन्तर्गत बहेरिया ग्राम के निवासी सुविख्यात स्व.चुन्नी लाल पाण्डे के सुपौत्र श्री सत्य प्रकाश पाण्डेय के पुत्र अभय पाण्डे ने अपना नवीन गृह बालागंज क्षेत्र में निर्मित कराया है। वैदिक परम्पराओं के इस परिवार के वर्तमान प्रमुख हैं श्री ओम प्रकाश पाण्डे मंगल बाजार सण्डीला, जिला हरदोई।

श्री पाण्डेय की देखरेख में बालागंज में निर्मित नवीन गृह में गृह प्रवेश का भव्य समारोह सम्पन्न हुआ। डॉ.वेद प्रकाश आर्य प्रधान सम्पादक आर्य लोक वार्ता के आचार्यत्व में वृहद् यज्ञ सम्पन्न हुआ। यज्ञ में अभय पाण्डेय एवं श्रीमती गुंजन, रामेन्द्र एवं श्रीमती अंशू इत्यादि ने भाग लिया। श्री सुरेश चन्द्र तिवारी (निवासी ग्राम-गोनी, हरदोई) की उपस्थिति उल्लेखनीय थी। इस अवसर पर पाण्डेय परिवार के सदस्यगण एवं इष्टमित्र बड़ी संख्या में मौजूद थे।

संस्थापक
स्व. स्वामी आत्मबोध सरस्वती

प्रधान संपादक
डॉ0 वेद प्रकाश आर्य
कार्यालय-19/838, प्रथम तल, रिंगरोड, इन्दिरानगर, लखनऊ-226016
9450500138

संपादक (अवैतनिक)
आलोक वीर आर्य
: 8400038484

प्रसार व्यवस्थापक
अमित वीर त्रिपाठी
: 9795445800

संवाद प्रमुख
गौरीशंकर वैश्य 'विनम्र'
: 9956087585

कार्यालय प्रमुख
श्रीमती सरला आर्य
: 9450500138

विशेष कार्याधिकारी
श्रीमती निमिषा वाजपेयी
: 7310119999

नवोन्मेष
कृष्णा जी. पिंटेक

E-mail - aryalokvarta@gmail.com

सहयोग राशि

सामान्य सदस्य	–	100 रु. वार्षिक
होता सदस्य	–	1,500 रु. वार्षिक
संरक्षक	–	15,000 रु.
प्रतिष्ठापक	–	50,000 रु.

सहयोग राशि निम्नलिखित बैंक की किसी भी शाखा में 'आर्य्य लोक वार्ता' खाते में जमा कर हमें सूचित कर सकते हैं। विवरण इस प्रकार है–

बैंक–बैंक आफ बड़ौदा, विभव खण्ड, गोमती नगर, लखनऊ।
IFSC - BARBOVIBHAV
खाता धारक – आर्य लोक वार्ता
खाता सं. – 46900 1000 00651

प्रतिष्ठापक
श्री आनन्द कुमार आर्य, कोलकाता
श्री अरविन्द कुमार आर्कीटेक्ट, लखनऊ
श्री जे.पी.अग्रवाल, कनखल, हरिद्वार
डॉ. रजत बत्रा, लखनऊ

संरक्षक
श्री अर्जुनदेव चड्ढा, कोटा
डॉ. रूपचन्द्र 'दीपक', लखनऊ
श्रीमती बलबीर कपूर, लखनऊ
श्रीमती मिनी स्वरूप, नई दिल्ली
श्रीमती मधुर भण्डारी, नई दिल्ली
श्रीमती कमलेश पाल, लखनऊ,
कर्नल पाल प्रमोद, मेरठ
आचार्य आनन्द मनीषी, लखनऊ
पं.ज्ञानेन्द्र दत्त त्रिपाठी, लखनऊ
श्रीमती रामा आर्य 'रमा', लखनऊ
विश्वमित्र, एडवोकेट, लखनऊ
सर्वमित्र शास्त्री, लखनऊ

परामर्श एवं सहयोग
श्री वीरेन्द्र कुमार आर्य 'वीरजी', सीतापुर
डा. सत्य प्रकाश, सण्डीला, हरदोई

सलाहकार
श्री आनन्द चौधरी एडवोकेट, लखनऊ

मुद्रक, स्वामी और प्रकाशक डॉ. वेद प्रकाश आर्य के लिए क्रियेटिव ग्राफिक्स, बी–2, हिमांशु सदन, 5–पार्क रोड, लखनऊ द्वारा मुद्रित तथा 'वेदाधिष्ठान' 539क/234 हरीनगर, (रवीन्द्रपल्ली) पो.–इन्दिरानगर, लखनऊ से प्रकाशित।